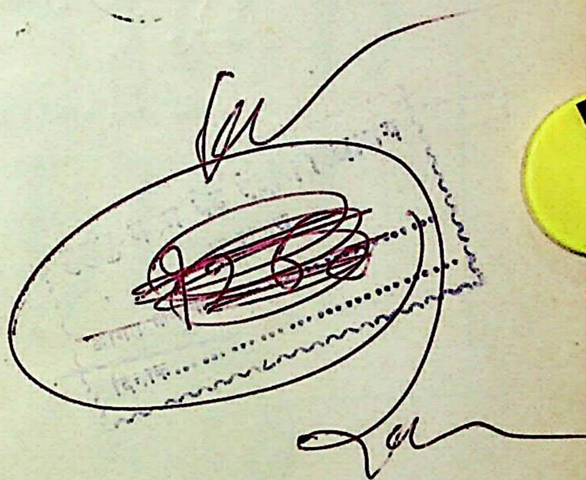

बृहद्
सूक्ति-कोश

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।



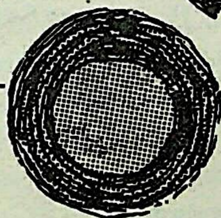
सूक्तियों में नीति के वचन थोड़े शब्दों में गागर में सागर की भाँति बड़ी सुन्दरता से व्यक्त होते हैं। इनमें उपदेश देने की छटा निराली होती है। ये भावों को सजा-संवार कर सजीव बनाने एवं वक्तव्य कला को चमकाने में बड़ी सहायक होती हैं।

—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

खण्ड ग्यारह

वृहत् सूक्ति कोश



विश्व के लब्ध-प्रतिष्ठ मनीषियों की विशिष्ट सूक्तियों का संदर्भ-ग्रन्थ

सम्पादक

शरण

प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
२०५, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली
सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन
सम्पादक : शरण
संस्करण : १९७८
खण्ड : एकादश
मूल्य : दस रुपये
मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

VRIHAT SOOKTI KOSH : SHARAN : PART XI
(A Book of Quotations)
Rs 10.00

आमुख

सूक्तियाँ विश्व साहित्याकाश के दैदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र ही नहीं अपितु मानव के अन्तराल में व्याप्त उल्लास की तरंगों को उद्वेलित करने वाली ऐसी ज्योति हैं जिसके प्रकाश में बुद्धि और हृदय एक साथ आलोकित होते हैं। यदि ये न हों तो साहित्य नीरस हो जाए और हमारा हृदय स्वर्गिक आनन्द से वंचित हो जाए। जहाँ ये अपने माधुर्य से अन्धकार के आवरण को छिन्न-भिन्न करके उसे प्रकाशित कर सकती हैं, जहाँ ये निराशा के बंधनों में जकड़े हुए पत्रों में समीर की तीव्र गति डाल सकती हैं, जहाँ ये अन्तरतम की असह्य पीड़ा को क्षणमात्र में दूर कर सकती हैं; वहाँ ये गम्भीर से गम्भीर आघात पहुँचाने की भी क्षमता रखती हैं। इस पर भी यही कहना होगा कि ये सूक्तियाँ मानव सृष्टि में कल्पतरु के समान हैं।

इन सूक्तियों की विशाल छाया में विश्राम कर मानव अपने जीवन पथ की थकान को दूर कर भविष्य की दुर्गम यात्रा को शाँतिपूर्वक पूर्ण कर लेता है। अतः ये सूक्तियाँ मानव जगत् में ईश के समान ही सर्वव्यापी वन गई हैं। इनकी उपदेशात्मक छटा निराली ही है। इनमें नीति के बचन अल्प शब्दों में गागर में सागर के समान अद्वितीयता से व्यक्त होते हैं। हमारी संस्कृत देव भापा में तो इनका भण्डार है। अन्य विदेशीय भाषाओं में भी इन पर अच्छी पुस्तकें निकली हुई हैं। हिन्दी में भी इन सूक्तियों पर निकली हुई कई पुस्तकें देखने को मिलीं, पर सभी अपने में अपूर्ण-सी ही थीं। हिन्दी में इस कमी को दूर के लिए मैंने यह क्षुद्र सा प्रयास किया है। युग-युग के लब्ध प्रतिष्ठ मनीषियों की सूक्तियों के संकलन

में मेरे दस वर्ष बीते हैं। अब इन्हें कुछ-कुछ पूरा कर पाया हूं। अब मेरा प्रयास वृहत् सूक्ति कोश के रूप में आपके हाथ में है।

इस विशाल संदर्भ ग्रन्थ को पाठकों की सुविधा हेतु बारह खण्डों में विभाजित कर दिया है। वृहत् सूक्ति कोश का प्रत्येक खण्ड अपने में पूर्ण है। इसमें लगभग सभी लब्ध प्रतिष्ठ देशी-विदेशी विद्वानों, कवियों, विचारकों, संतों एवं दार्शनिकों की मूल व अनूदित सूक्तियों के रूप में अमरवाणी का संकलन है। इसमें मैंने आधुनिक लेखकों की सूक्तियों को भी उसी आदर से संकलित किया है जिस सम्मान से प्राचीन विचारकों एवं लेखकों की सूक्तियों को। प्रत्येक खण्ड के अंत में विषयों की अनुक्रमणिका के साथ-साथ रचयिताओं की तालिका दे दी गई है। इससे पाठकों को विशेष सुविधा मिलेगी।

वृहत सूक्ति कोश का प्रत्येक खण्ड मेरे कृपालु पाठकों चाहे वे शिक्षार्थी हों, चाहे साहित्यकार हों, चाहे प्राध्यापक हों और चाहे राजनीतिज्ञ हों, के हाथों में से गुजरेगा, ऐसा मेरा अटूट विश्वास है। उनसे केवल मेरी सादर अनुनय यही है कि वे इनमें जो अपूर्णता एवं त्रुटि देखें उसके विषय में मुझे सूचित करने की कृपा करें। इनमें अधिक से-अधिक संशोधन के लिए उदार भाव से मित्रों के परामर्श का स्वागत करूँगा।

विनीत

शरण

विषय-तालिका

शासन

कसीदे से न चलता है न ये दोहे से चलता है।
समक्ष लो खूब कारे सल्तनत लोहे से चलता है।।

—अज्ञात

शासन प्रणाली की रूपरेखा पर मूर्खों को वाद-विवाद करने दो। वही सर्वोत्तम शासन है जो सुव्यवस्थित हो।

—पोप

वह शासन है स्वयं कलंक, जिसमें जन हों दिन-दिन रंक।
भूखों मरें न पावें वस्त्र, हो जावें निर्बल निःशास्त्र।।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

भीति-भरी शासन की नीति,
पाती नहीं प्रजा की प्रीति।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

शासन का प्रधान कर्त्तव्य भीतर और बाहर की अशांतिकारी शक्तियों से देश को बचाना है। शिक्षा और चिकित्सा, उद्योग और व्यवसाय गौण कर्त्तव्य हैं।

—प्रेमचन्द (आदर्श विरोध)

वर्तमान शासन-प्रथा इसी महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त पर गठित है और घृणा तो किसी में करनी ही न चाहिए। हमारी आत्माएँ पवित्र हैं। उनसे घृणा करना परमात्मा से घृणा करने के समान है।

—प्रेमचन्द (बैंक का दिवाला)

कौन शासन सर्वोत्तम है ? जो आत्म शासन की शिक्षा देता है।

—गेटे

एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर राज्य करे यह विचार दोनों के लिए असह्य है, बुरा है और दोनों को नुकसान पहुँचाने वाला है।

—महात्मा गांधी

शासन-दण्ड धर्म में परिवर्तन नहीं करा सकता।

—जयशंकर प्रसाद

प्रेम से शासन करना मानवता है, अन्याय से शासन करना वर्बरता है।

—प्रेमचन्द

सम्पूर्ण राष्ट्र के रक्त रहित विरोध के समक्ष कोई शासन सम्भवतः टिक नहीं सकता !

—महात्मा गांधी

शासन की जगह वहाँ होती है, जहाँ प्रेम को जगह नहीं।

—जैनेन्द्र

शासन का मन्त्र है, भेद डालो और राज्य करो। जन-समाज में श्रेणियाँ डालकर शासन चलाया जाता है। ऊँच और नीच, अमीर और गरीब इस तरह के भेद सत्ता के लिए वहुत जरूरी है। क्योंकि उस भेद के कारण सत्त' अनिवार्य वनती है। दो लड़ें तो वीच-वचाव का काम हाथ में लेने तीसरा आ ही जाता है।

—जैनेन्द्र

पूँजी शासन करती है, श्रम शोषित होता है। ऐसे विषमता पैदा होती है और तरह-तरह की व्याधियाँ जन्म लेती हैं। समाज में श्रेणियाँ उपजती हैं, उनमें तनाव होता है और समाज-शरीर के फटने की हालत वनी रहती है।

—जैनेन्द्र

शिक्षक

दुर्भाग्यवश हमारे शिक्षक पुस्तक पढ़ाने के एक उपलक्ष्यमात्र हैं, और हम भी पुस्तक पढ़ने के 'उपसर्ग'।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आवरण)

लोक-शिक्षक चरित्रहीन हो तो वह बिना खारेपन के नमक जैसा फीका होगा।

—महात्मा गांधी

शिक्षक का अपना चरित्र भी ऐसा होना चाहिए जो मूक शिक्षण का कार्य करे, जिसे देखकर शिक्षार्थी की श्रद्धा जागृत हो जाए।

—अज्ञात

ऐसे सत्य सिखाना जग को, अनाचार जग से मिट जाये।
मिटे स्वर्ग की असत कल्पना, शाश्वत सत्य भूमि पर आये॥
तुम भू के भगवान्, तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं।
तुम अन्तर के माली, तुम से फूल जिन्दगी के खिलते हैं॥
मैं भूलूँगा पर तुम मुझसे भूलों पर उदास न होना।
तुम शिक्षक, विद्वान् तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना॥

—रघुवीरशरण मित्र (भूमि के भगवान)

शिक्षण

शिक्षण दण्ड है, यह गुलामी की भावना ही आज विद्यार्थियों में प्रचलित है।

—विनोबा भावे

शिक्षण का कार्य कोई स्वतन्त्र तत्त्व उत्पन्न करना नहीं है, सुप्त तत्त्व को जाग्रत करना है।

—विनोबा भावे

शासन-विधान

वढ़िया शासन-विधान बनाना सरल है पर उसके अनुसार आचरण कर सकना बड़ा कठिन है। यह तभी हो सकता है जब कि सर्वसाधारण में नागरिकता का उच्च भाव विकसित किया जाय।

—श्रीनिवास शास्त्री

शिक्षा

शिक्षा, आज इसने हिन्दुस्तान को क्या बना दिया है? हृदय की सारी विभूति को चूस लेती है, आदमी को दम्भ करना सिखाती है, अपने शब्द-जाल में सच्चाई को ढक लेती है और बड़े-बड़े कामों को दिखाकर आदमी को उलझा देती है।

—जैनेन्द्र

जो शिक्षा हमें आत्मस्थ नहीं होने देती, अतीत की गौरव-गाथा को मिटाकर आत्म-सम्मान पर लगातार चोट पहुँचाती है, कानों को केवल वह सुनाती रहती है कि हमारे बाप-दादे केवल भूतों के ओझा, मंत्र-तंत्र और ज्योतिषी आदि को लेकर ही व्यस्त थे, उन्हें कार्य-कारण के सम्बन्ध का ज्ञान नहीं था, और विश्व जगत् के अव्याहत नियम की भी धारणा नहीं थी, इसीसे हमारी यह दुर्दशा है, तो उस शिक्षा में चाहे जितना मजा हो, उसके साथ बिना बाधा के मेल मिलौवल जरा देख-सुनकर ही करना अच्छा है।

—शरच्चन्द्र (शिक्षा का विरोध)

विद्यान के साथ जीवन का आदर्श कुछ ऊँचा न हुआ तो पढ़ना व्यर्थ है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

शिक्षा का मतलव है, व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास।

—जैनेन्द्र

भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र हिन्दू हैं अथवा म्लेच्छ, यह कोई नहीं कहता। विद्या की कोई जाति नहीं होती, यह बात सच है, किन्तु इसीसे यह कहना कि कल्चर अथवा संस्कृति की भी कोई जाति नहीं, किसी तरह सत्य नहीं। और उनकी (पश्चिम) शिक्षा को विष की तरह छोड़ने के लिए अगर किसी ने व्यवस्था दी हो तो सिर्फ इसी कारण, विद्या के कारण नहीं।

—शरच्चन्द्र (शिक्षा का विरोध)

दरिद्र से दरिद्र हिन्दुस्तानी मजदूर भी शिक्षा के उपकारों का कायल है। उसके मन में यह अभिलाषा होती है कि मेरा बच्चा चार अक्षर पढ़ जाए। इसलिए नहीं कि उसे कुछ अधिकार मिलेगा, वल्कि केवल इसलिए कि शिक्षा मानवी शील का एक श्रृंगार है।

—प्रेमचन्द (प्रेरणा)

शिक्षा का कम से कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि धार्मिक विषयों में हम मूर्खों की प्रसन्नता को प्रधान न समझें।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

वकीलों की सूक्ष्म आलोचनाओं के तत्त्वों को समझना इतना कठिन नहीं है जितना किसी निरुत्साही लड़के के मन में शिक्षा की रुचि उत्पन्न करना है।

—प्रेमचन्द (वरदान)

कभी-कभी उन लोगों से शिक्षा मिलती है, जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

युवकों की शिक्षा का भार केवल आदर्श चरित्रों पर रखना चाहिए। विलास में रत, शौकीन, कालेजों के प्रोफेसर और विद्यार्थियों पर कोई अच्छा असर नहीं डाल सकते।

—प्रेमचन्द (विश्वास)

शिक्षा दुष्टों की स्रष्टा है, प्रकृति सत्पुरुषों की।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है—हमारा सेवा-भाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरसता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागरित न हुई, तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।

—प्रेमचन्द (कर्मभूमि)

अंग्रेजी शिक्षा ने ऐसा पददलित किया है कि जब तक यूरोप का कोई विद्वान् किसी विषय के गुण-दोष प्रगट न करे तब तक आप उस विषय की ओर उदासीन रहते हैं।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

शिक्षा का फल उदारता, त्याग, सद्इच्छा, सहानुभूति, न्यायपरता और दयाशीलता है।

—प्रेमचन्द (पशु से मानव)

मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्तरूप से विद्यमान है, उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है।

—स्वामी विवेकानन्द

देह और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है, उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

—प्लेटो

शिक्षा का महान् उद्देश्य ज्ञान नहीं कर्म है।

—हर्बर्ट स्पेन्सर

शिक्षा जीवन की तैयारी का शिक्षण काल है।

—विलमट

शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है।

—बर्क

मनुष्यों को पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रस्तुत करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

—हर्बर्ट स्पेन्सर

शिक्षा का ध्येय चरित्र-निर्माण है।

—हर्बर्ट स्पेन्सर

जिन्होंने मनुष्य पर शासन करने की कला का अध्ययन किया है, उन्हें यह विश्वास हो गया है कि युवकों की शिक्षा पर ही राज्यों का भाग्य आधारित है।

—अरस्तू

शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है।

—डॉ० जान जी० हिबन

शिक्षा क्या है? पुस्तकों का ढेर? बिल्कुल नहीं, बल्कि विश्व के साथ, मनुष्यों के साथ और कार्यों से पारस्परिक सम्बन्ध।

—बर्क

शिक्षा का रहस्य शिष्य का आदर करने में है।

—एमर्सन

सर्वव्यापी शिक्षा के बिना व्यापक मताधिकार अभिशाप हो सकता है।

—वेलैन्ड

शिक्षा मानवात्मा के लिए वैसी ही है जैसे संगमरमर के टुकड़े के लिए शिल्पकला।

—एडीसन

हमारी आज की शिक्षा में चाहे जितने सद्‌गुण हों; किन्तु उसमें जो सबसे बड़ा दुर्गुण है वह यही है कि उसमें बुद्धि को ऊँचा और श्रम को नीचा स्थान दिए जाने की भावना है।

—अज्ञात

उच्च शिक्षा के प्रभाव से मनुष्यों की बुद्धि सुकुमारता छोड़ प्रौढ़ता प्राप्त करती है।

—अज्ञात

कार्य-कौशल और कर्मशीलता ही हमारी शिक्षा का मूल मंत्र हैं।

—अज्ञात

शिक्षा केवल ज्ञान-दान नहीं करती वह संस्कार और सुरुचि के अंकुरों का पालन भी करती है।

—अज्ञात

जिस शिक्षा में समाज और राष्ट्र की हित चिन्ता के तत्त्व नहीं हैं, वह कभी सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती।

—अज्ञात

हमारी शिक्षा तब तक अपूर्ण ही रहेगी जब तक उसमें धार्मिक विचारों का समावेश नहीं किया जायेगा।

—अज्ञात

इंगलिश भाषा पढ़ लई, हुआ शब्द का बोध।
शिक्षा का घर दूर है, देख आत्मा शोध।।

—मेलाराम (शिक्षा सहस्री)

शिक्षा के भंडार की, लखी अनोखी बात।
एक न पावत शुल्क बिन, एकन को न सुहात।।

—रामेश्वर करुण (करुण सतसई)

नव शिक्षा नव सभ्यता, को पावन परिधान।
धारत ही उन्नत भये, तुर्की अरु जापान।।

—रामेश्वर करुण (करुण सतसई)

वह शिक्षा केहि काम की, जनि काहू पै होय।
लहै सहसुन व्यय किये, काम न आवै कोय।।

—रामेश्वर करुण (करुण सतसई)

जो शिक्षा मानव को इतना संकीर्ण और स्वार्थी बना देती है, उसका मूल्य किसी युग में चाहे जो रहा हो, अब नहीं है।

—शरच्चन्द्र (नया विधान)

शिक्षा प्राप्त करने के तीन आधार स्तम्भ हैं—अधिक निरीक्षण करना, अधिक अनुभव करना एवं अधिक अध्ययन करना।

—केथराल

मैं तुम्हें यही शिक्षा दूंगा कि तुम केवल मिनटों का ध्यान रखो, घंटे स्वयं अपना ध्यान रखेंगे।

—चेस्टरफील्ड

मिट्टी, पानी, हवा और प्रकाश के साथ पूरा-पूरा सम्बन्ध बिना रहे शरीर की शिक्षा पूर्ण नहीं होती।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आवरण)

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है।

—महात्मा गांधी

जैसे सूर्य सबको एक-सा प्रकाश देता है, बादल जैसे सबके लिए समान बरसते हैं, उसी तरह विद्या-वृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए।

—महात्मा गांधी

युवकों को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखें।

—मदनमोहन मालवीय

संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है।

—निराला

शिक्षा भी अपने स्थान पर न हो तो वैसी ही निकम्मी है जैसे योग्य जगह पर न होने से किसी चीज की गिनती कचरे में की जाती है।

—महात्मा गांधी

शिक्षा और सम्पत्ति का प्रभुत्व हमेशा रहा है और रहेगा।

—प्रेमचन्द

शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है।

—स्वामी विवेकानंद

जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिए तैयार करे, जो हमें धरती और धन का गुलाम बनाये, जो हमें भोग-विलास में डुबोये, जो हमें दूसरों का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाये, वह शिक्षा नहीं भ्रष्टता है।

—प्रेमचन्द (प्रेम पचीसी)

शिशु

बेचारे शिशु तो अभी तक प्रकृति के ही ऋणी हैं, सभ्यता का ऋण लेकर वे उसके आसामी नहीं बनना चाहते।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आवरण)

छोटे बच्चे तो भगवान् की, परब्रह्म की छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं।

—साने गुरु

शिशु के आत्म-विश्वास को नष्ट करना, उसके मन पर निराशा की छाया डालना, बड़ा ही भयानक पाप है।

—स्वेट मार्डन

शिशुओं को तो शाबाशी, प्रशंसा और उत्साह की आवश्यकता है। इन्हीं से उनका जीवन प्रगतिशील हो सकता है।

—स्वेट मार्डन

प्रेरणाशक्ति के द्वारा शिशुओं की उन शक्तियों का विकास किया जा सकता है, जिन पर उनका स्वास्थ्य, सफलता और सुख निर्भर है।

—स्वेट मार्डन

इतिहास की धूल से मलिन न होते हुए, शिशु अनन्त समय के रहस्य में सदैव निवास करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

नीरव रात्रि में माता का सौन्दर्य आभासित होता है और कोलाहल-पूर्ण दिवस में शिशु का।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

देवालय के गंभीर अंधकार से शिशु धूल में बैठने के लिए बाहर भाग आते हैं, ईश्वर उन्हें खेलते हुए देख उनकी रखवाली करता है और पुजारी को भूल जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जीवन की महत्त्वाकांक्षायें शिशुओं के रूप में आती हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

शिशुओं की दुनिया अलौकिक है, अद्भुत है, अद्वितीय है और आराध्य है।

—अज्ञात

शिशु ऊपर से देखने पर तो सभी का आश्रित है, किन्तु वस्तुतः वही सम्पूर्ण परिवार का सम्राट होता है।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

शिशुत्व

महापुरुष जन्म-सिद्ध शिशु है। जब वह मरता है तो अपना शिशुत्व संसार को प्रदान कर जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

क्रान्ति की राह पकड़कर शिशुत्व का बाना पहनो।

—रस्किन

शिशुत्व मनुष्य-जीवन में ईश के सद्गुणों की एक धरती है, जो माता-पिता उनकी उचित देख-रेख रखते हैं, उन्हें कभी पछताना नहीं पड़ता।

—अज्ञात

अपने रोग की सच्ची चिकित्सा और आत्म-शिक्षा का वास्तविक ज्ञान आपको शिशुत्व की आत्मा में ही मिलेगा। शिशुत्व को अपनाओ—इसीमें आपका हित है।

—रस्किन

शिष्टाचार

शिष्टाचार का मूल सिद्धान्त है दूसरे को अपने प्रेम और आदर का परिचय देना और किसी को असुविधा और कष्ट न पहुँचाना।

—अज्ञात

शील

शील द्वारा ही चरित्र का निर्माण होता है, शील हमारी गति के लिए सम्बल है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (ब्रह्म विचार)

सीलवंत सब ते वड़ा, सर्व रतन की खानि।
तीन लोक की सम्पदा, रही सील में आनि।।

—कबीर

ज्ञानी, घानी, संयमी, दाता सूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत हैं, सीलवंत कोई एक।।

—कबीर

सुख का सागर सील है, कोइ न पावै थाह।
सब्द बिना साधू नहीं, द्रव्य बिना नहीं साह।।

—कबीर

सील छिमा जब उपजै, अलख दृष्टि तब होय।
बिना सील पहुँचे नहीं, लाख कथै जो कोय।।

—कबीर

शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बंधुभिः ॥

(शील मनुष्य जीवन का अमूल्य रत्न है। उसे जिस मनुष्य ने खो दिया उसका जीवित रहना ही व्यर्थ है। वह चाहे जितना धनवान् या भरे-पूरे घर का हो, उसका मूल्य नहीं रहता।)

—महाभारत

धर्म, सत्य, सदाचार, बल और लक्ष्मी सब शील के ही आश्रय पर रहते हैं। शील ही सब की जड़ है।

—महाभारत

सब धर्मों में शील एक छिपा खजाना है।

—महाभारत

अपनी प्रभुता के लिए चाहे जितने उपाय किए जायें; किन्तु शील के बिना विश्व में सब फीका है।

—महाभारत

सील कि मिल बिन सुध सेवकाई। जिमि बिनु तेज न रूप गोसाईं ॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

शुद्ध

बहता पानी और रमता योगी ही शुद्ध रहते हैं।

—स्वामी विवेकानन्द

ज्ञान शुद्ध होता नहीं दृश्यमान जगती का,
स्थिति से परिस्थिति से प्रभावित वह रहता है।
नील होती जलतरंग जमुना में मिलते ही
वही जल गंगा में स्फटिक रूप गहता है ॥

—उदयशंकर भट्ट (कणिका)

अपुत्रस्य गृहं शून्यं दिशः शून्यास्त्यवांधवाः ।
मूर्खस्य हृदयं शून्यं सर्वशून्या दरिद्रता ॥

(पुत्रहीन का घर शून्य है, वंधु रहित दिशाएँ शून्य हैं, मूख का हृदय शून्य है और निर्धनता के होने पर सब कुछ शून्य है ।)

—चाणक्य

शूद्र

रक्खो न व्यर्थ घृणा कभी, निज वर्ग से या नाम से,
मत नीच समझो आपको, ऊँचे बनो कुछ काम से ।
उत्पन्न हो तुम प्रभु-पदों से, जो सभी को ध्येय हैं,
तुम हो सहोदर सुरसरी के, चरित जिसके गेय हैं ॥

—मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती)

शूर

शूर वीर वही है जो बिना शस्त्र धारण किये शत्रु के सामने छाती खोलकर मरने का साहस करता है ।

—महात्मा गांधी

तृणं ब्रह्मविदां स्वर्गः तृणं शूरस्य जीवितम् ।
जिताक्षस्य तृणं नारी निःस्पृहस्य तृणं जगत् ॥

(ब्रह्म ज्ञानी को स्वर्ग तिनके के समान है, शूर को जीवन तिनके समान है, जितेन्द्रिय को नारी तिनके के समान जान पड़ती है, निस्पृह को संसार तिनके के समान है ।)

—चाणक्य

शारीरिक शौर्य पाशविक प्रवृत्ति है । नैतिक शौर्य बहुत उच्च और सच्चा शौर्य है ।

—वेन्डेल फिलिप्स

सच्चे शूर-वीरों के सामने सेना की शक्ति कुछ काम नहीं करती।

—महाभारत

हत्या में वीरत्व नहीं है, यह तो है क्रूरों का कर्म;
निधन नहीं, रक्षा करना ही, है सच्चे शूरों का धर्म।

—सियारामशरण गुप्त (आत्मोत्सर्ग)

शैतान

दुष्ट आदमी के हाथ में नीति-शास्त्र का हथियार आने से ही तो वह शैतान कहलाता है।

—महात्मा गांधी

शैतान मनुष्य को अंधा ही नहीं बहरा भी बना देता है।

—अज्ञात

सूरा सो पहिचानिये, लड़े दीन के हेत।
पुर्जा-पुर्जा कट मरे, तबहूँ न छांडे खेत॥

(शूर वही है जो धर्म के लिए युद्ध करता है, जो समरभूमि में टुकड़े-टुकड़े होकर मरता है, पर मैदान छोड़कर कभी भी भागता नहीं।)

—गुरु गोबिन्दसिंह

वीर वह होता है, जो प्राणों के मोह से परे हो।

—गुरु गोबिन्दसिंह

शैशव

कुछ लोगों का शैशव शीघ्र समाप्त हो जाता है, और कुछ बहुत अधिक समय तक शिशु बने रहते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

भगवान इस बात की प्रतीक्षा करता है कि मनुष्य अपने शैशव-काल में ज्ञान को प्राप्त कर ले।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

शैशव-काल मनुष्य का वैसे ही आभास कराता है जैसे सवेरा दिन का।

—मिल्टन

शैशव कभी-कभी मानव के जीवन में एक वार पुनः आता है, पर यौवन कभी नहीं।

—श्रीमती जेन्सन

शैशव में समस्त मानवीय सद्गुणों के अंकुर मौजूद रहते हैं। जो माता-पिता चतुर माली की तरह अपने शिशु में उनकी देखरेख रखते हैं, वे उसका समुचित पुरस्कार पाते हैं।

—अज्ञात

न तो सोचता है भविष्य पर, न तो भूत का धरता ध्यान,
केवल वर्तमान का प्रेमी, इसीलिए शैशव छविमान।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (नये सुभाषित)

शोक

शोक केवल एक मन के भाव के आकार में ही टिका रहना नहीं चाहता, वह वाहर भी किसी एक व्रत-चर्चा में स्वयं को सत्य प्रमाणित करने का प्रयास करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नौका डूबी)

शोक की सीमा कंठाविरोध है, पर शुष्क और दाहयुक्त, आनन्द की सीमा भी कंठाविरोध है, पर आर्द्र और शीतल।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

निज पुत्र की मृत्यु का शोक जाति पर पड़ने वाली विपत्ति से कहीं अधिक होता है। निज शोक मर्मान्तक होता है, जाति शोक निराशाजनक, निज शोक पर हम रोते हैं, जाति शोक पर चिन्तित हो जाते हैं।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

ऐसा कोई शोक नहीं है जिसे समय की गति कम और हल्का न करदे।

—सिसरो

विपत्ति में शोक और भी दुस्सह हो जाता है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

शोक की सर्वोत्तम औषधि कार्य में संलग्न रहना है।

—यंग

शोक के गहरे घाव को समय का मरहम ही पूरा करता है।

—अज्ञात

कम शोक कथनीय है किन्तु महान् शोक गूंगा होता है।

—सेनेका

शोको नाशयते धैर्यं शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशयते सर्वं नास्ति शोकसमो रिपुः॥

(शोक धीरज़ को नष्ट करता है, शोक शास्त्र ज्ञान को भी नष्ट कर देता है, शोक सब कुछ नष्ट कर डालता है और शोक के समान कोई शत्रु नहीं है।)

—वाल्मीकि रामायण

किसी के बहुत सताने पर भी उसे सताने का प्रयास नहीं करना चाहिए, क्योंकि दुःखी प्राणी का शोक ही सताने वाले का नाश कर देता है।

—महाभारत

शोषण

शोषण यदि पापों का हो,
पोषण अपना तब होगा।
शोषण यदि जीवों का हो,
उत्कर्ष कहाँ कब होगा?

—बलदेवप्रसाद मिश्र (साकेत संत)

निर्धन की कुटिया ढा कर,
जो अपना महल बनाते।
आहों की फूँकों से ही,
वे एक दिवस ढह जाते।।

—बलदेवप्रसाद मिश्र (साकेत संत)

जागो, एक क़तार बना लो,
जीभ खींच लो इस शोषण की,
तोड़ो डाढ़ें करो इति श्री
तुम मिल कर निज उच्छोषण की।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (हम विषपायी जनम के)

जिसको शोषण कहा जाता है, उसकी जड़ में संकीर्ण स्वार्थ की वृत्ति है।

—जैनेन्द्रकुमार (प्रस्तुत प्रश्न)

शोभा

शोभा चाल-चलन में होती है, दिखावट में नहीं।

—महात्मा गांधी

कोकिलानां स्वरो रूपं स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्।।

(कोयलों की शोभा स्वर हैं, स्त्रियों की शोभा पतिव्रत धर्म है, असुन्दरों की शोभा विद्या है, तपस्वियों की शोभा क्षमा है।)

—चाणक्य

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवा:।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका:।।

(सुन्दर, तरुण और उच्च कुल में जन्म लेने वाले विद्याहीन मनुष्य गंधहीन पलाश के सुमनों के समान शोभा नहीं पाते।)

—चाणक्य

निर्धनता धीरजता से शोभित होती है, स्वच्छता से कुवस्त्र अच्छा लगता है, कुअन्न उष्णता से अच्छा है, कुरूपता सुशीलता से शोभा देती है।

—चाणक्य

संकट के समय धैर्य, अभ्युदय के समय क्षमा अर्थात् सब सहन करने की सामर्थ्य, सभा में वक्तृता और संघर्ष में वीरता शोभा देती है।

—भर्तृहरि

द्विज सोहत विद्या पढ़ें, छत्री रन जय पाय।
लक्ष्मी सोहत दान सों, तिमि कुलवधू लजाय॥

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (भारतेन्दु नाटकावली)

सोभति सो न सभा जहँ वृद्ध न, वृद्ध न ते जु पढ़ै कछु नाहीं।
तें न पढ़े जिन साधु न साधित, दीह दया न दिपै जिन माहीं॥
सो न दया जु न धर्म धरै धर, धर्म न सो जहँ दान वृथाहीं।
दान न सो जहँ साँच न केसव, साँच न सो जु बसै छल छाहीं॥

—केशव (केशव ग्रन्थावली)

शौर्य

शौर्य किसी में बाहर से पैदा नहीं किया जा सकता, यह तो मनुष्य के स्वभाव में होना चाहिए।

—महात्मा गांधी

श्मशान

श्मशान ही एक ऐसा स्थल है जहाँ पहुँचकर विश्व की अमरता का प्रत्यक्ष अनुभव होता है।

—अज्ञात

संसार का मूक शिक्षक 'श्मशान' क्या डरने की वस्तु है ? जीवन की नश्वरता के साथ ही सर्वात्मा के उत्थान का ऐसा सुन्दर स्थल और कौन हैं।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

सभी थके मानव शांति पा सकें,
अशान्त जो दानव शांति पा सक,
यहीं इसी स्थान-विशेष में सदा
पुकारते लोग जिसे श्मशान हैं।

—अनूप (वर्द्धमान)

श्रद्धा

जहाँ श्रद्धा है, वहाँ पराजय नहीं है। श्रद्धालु का अकर्म भी कर्म हो जाता है।

—महात्मा गांधी

श्रद्धा महत्त्व की आनन्दपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य बुद्धि का संचार है।

—रामचन्द्र शुक्ल

प्रेम में केवल दो पक्ष होते हैं, श्रद्धा में तीन। प्रेम में कोई मध्यस्थ नहीं पर श्रद्धा में मध्यस्थ अपेक्षित है।

—रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा का व्यापार-स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त। प्रेम में घनत्व अधिक है।

—रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा की गुंजाइश तो वहीं है, जहाँ बुद्धि कुंठित हो जाय।

—महात्मा गांधी

किसी मनुष्य में जन-साधारण से विशेष गुण या शक्ति का विकास देख उसके सम्बन्ध में जो एक स्थायी आनन्द-पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं।

—रामचन्द्र शुक्ल

हे भारत! सबकी श्रद्धा अपने स्वभाव का अनुसरण करती है। मनुष्य में कुछ न कुछ श्रद्धा तो होती ही है। जैसी जिसकी श्रद्धा, वैसा वह होता है।

श्रद्धा का मूल तत्त्व है दूसरे का महत्त्व-स्वीकार।

—रामचन्द्र शुक्ल

सद्‌विचार पर बुद्धि रखने का ही नाम श्रद्धा है। यही श्रद्धा मनुष्य को बल देती है, सब तरह से प्रेरणा देती है और उसके जीवन को सार्थक बनाती है।

—विनोबा भावे

श्रद्धा अर्थ है आत्म-विश्वास और आत्म-विश्वास का अर्थ है ईश्वर पर विश्वास।

—महात्मा गांधी

श्रद्धा एक ऐसी आनन्दपूर्ण कृतज्ञता है जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधि रूप में प्रगट करते हैं।

—रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा देवता को भी खींच लेती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

वस्तुतः निराश हृदय को सान्त्वना, अवलम्बन और जीवन देनेवाली वृत्ति श्रद्धा ही है—श्रद्धा में आत्म-समर्पण है।

—अज्ञात

प्रेम में कुछ मान भी होता है, कुछ महत्त्व भी। श्रद्धा तो अपने को मिटा डालती है और अपने मिट जाने को ही अपना इष्ट बना लेती है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

श्रद्धा तो रानियों और साधुओं ही के अधिकार की वस्तु है।

—प्रेमचन्द (प्रेरणा)

मनोवांछित पदार्थ का मूल श्रद्धा ही हो सकती है।

—स्वेट माडॅन

श्रद्धा-आस्था ही हमारे आदर्श की बाह्य रेखा हैं।

—स्वेट माडॅन

अनुचित ज्ञानोपासन नाहीं। श्रद्धा विनु न सार तेहि माहीं ॥
श्रद्धा-योग लहत जब ज्ञाना। सकत तबहिं करि कल्याणा ॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

पार्थ ! जो श्रद्धा नाहिं, हवनदान तप व्यर्थ सव।
यह परलोकहु माहिं, हितकारी नहिं कर्म अस ॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

श्रद्धा-भक्ति-पयस्विनी गतिवती सत्कर्म संप्लाविनी,
सौख्या वर्तमयी, विमुक्त, सुखदा, पुण्य प्रसूना वृत्ता,
सर्वांशा जिस में निमूढ़ रहती सद्धर्म-रत्नावली,
सो निर्वाण-स्वरूपिणी बह चली पीयूष धारा नदी।

—अनूप शर्मा (सिद्धार्थ)

श्रम

पर-श्रम का उपभोग करे नर,
इससे सुख कर स्वयं करे श्रम,
जीवन विमुख रहे मन-मतिभ्रम,
इन्द्रिय सुख रत रहे, नरकतम।

—सुमित्रानंदन पंत (लोकायतन)

श्रम है केवल सार, काम करना अच्छा है,
चिन्ता है दुःखभार, सोचना पागलपन है।
पियो सोम या चाय, नाम में जो अन्तर हो,
मगर, स्वाद का हाल वही खट्टा-मीठा है।
—रामधारीसिंह 'दिनकर' (चक्रवाल)

पायेंगे प्रयास विना लोग खाने-पीने को,
फिर क्यों बहायेंगे वे श्रम के पसीने को !
होंगे अकर्मण्य, उन्हें क्या-क्या नहीं सूझेगा ?
कोई कुछ मानेगा न जानेगा न बूझेगा।
—मैथिलीशरण गुप्त (नहुष)

जिसका श्रम हो, भूमि उसी की,
अन्न वस्त्र, घर हो उसका,
शासन उसका संस्कृति उसकी,
नव युग का स्वर हो उसका।
—जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द (भूमि की अनुभूमि)

विना श्रम के कोई भी प्रगति नहीं करता।
—सफोक्लीज

श्रम से स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से संतोष पैदा होता है।
—बेही

विना श्रम के सुख नहीं मिलता।
—कहावत

सच्चा श्रम करने वाले का चेहरा मनोहर होता है।
—डेकर

मानव का सर्वोत्तम मित्र उसकी दस उँगलियाँ हैं।
—राबर्ट कोलियर

श्रम सभी पर विजयी होता है।
—होमर

श्रम और उद्योग चुम्बक के समान है, जो सब अच्छे-अच्छे पदार्थों को पास खींच लाते हैं।

—बार्टन

श्रम ईश्वर का सबसे बड़ा पूजन है।

—कार्लाइल

श्रम से हम अपना शोक भूल जाते हैं।

—सिसरो

श्रम जीवन है।

—कार्लाइल

श्रम की पूजा करो। वह ऐसा प्रभु है जो चतुर्मुख ब्रह्मा और चतुर्भुज विष्णु से भी बढ़कर शक्तिशाली है। उसकी पूजा करनेवाला त्रिकाल में भी कभी निराश नहीं होता है।

—अज्ञात

श्रेष्ठ

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है।

—मीरा

जो मनुष्य इन्द्रियों को मन से नियम रखकर संगरहित होकर कर्म करनेवाली इन्द्रियों द्वारा कर्मयोग का आरम्भ करता है वह श्रेष्ठ पुरुष है।

वास्तव में वे ही लोग श्रेष्ठ हैं जिनके हृदय में सर्वदा दया और धर्म बसता है, जो अमृत-वाणी बोलते हैं तथा जिनके नेत्र नम्रता वश सदा नीचे रहते हैं।

—मलूकदास

जो सम्पूर्ण प्राणियों को शान्त रखने का प्रयत्न करता है, सर्वदा सत्य व्यवहार करता है, कोमल स्वभाव होकर सबका सम्मान करता है, सर्वदा मुक्त भाव से रहता है वह कुल में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

—विदुर

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वह है जो अटल प्रतिज्ञा के साथ सत्य का अनुसरण करता है, जो आन्तरिक और बाह्य सभी प्रलोभनों का प्रतिरोध करता है, जो भारी से भारी भारों को खुशी से सहता है, जो तूफानों में शान्त रहता है, धमकियों एवं त्यौरियों में निडर रहता है और सत्य, नेकी तथा ईश्वर पर जिसकी निर्भरता सर्वथा अडिग है।

—चैनिंग

महात्मा गुणहीन साधारण जीवोंपर भी दया करते हैं। चन्द्र चाण्डाल के घर से अपनी किरणों को हटा नहीं लेता।

—हितोपदेश

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमोहन्ति नचतारा: सहस्रशः॥

(एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैकड़ों गुण रहित पुत्र नहीं। एक ही चन्द्र अंधकार को नष्ट कर देता है, सहस्रों तारे नहीं।)

—चाणक्य

संकट

महान् संकट में और जबकि आशा बहुत कम होती है तब सबसे निडर सम्मति ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

—लिवी

संकट का समय ही मानवात्मा को परखता है।

—टामस पेन

सबसे ज्यादा संकट का क्षण विजय के साथ आता है।

—नेपोलियन

संकट अगर न होते तो इस विश्व में महान् व्यक्तियों के चरित्रों को, जो हीरे के समान आज चमक रहे हैं, कौन चमकाता।

—अज्ञात

संकट के समय में बड़े मनुष्य थोड़े ही होते हैं और शेष की कोई गणना नहीं। छोटे-छोटे टीले जिनकी ऊँचाई खुले मौसम में साफ मालूम पड़ती है, बाद में डूब जाते हैं; किन्तु सबसे ऊँची पहाड़ की चोटियाँ जल की सतह के ऊपर दिखाई पड़ती हैं।

—लायड जार्ज

संकल्प

इतिहास, पुराण सभी साक्षी हैं कि मानव के संकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित होते हैं।

—एमर्सन

अच्छे कार्य को करने में धन की आवश्यकता कम पड़ती है, पर अच्छे हृदय और संकल्प अधिक।

—मूर

संकल्प कर लो, सोच समझ कर लो; लेकिन करने के बाद उसे मत छोड़ो। सत्य संकल्प ही भगवान् के प्रति सबसे बड़ी निष्ठा है।

—अज्ञात

संकल्प की शुद्धि और दृढ़ता ने ईश्वर तक को घंटों कच्चे धागे में बाँधकर नाच नचाया है।

—अज्ञात

जब संकल्प दृढ़ हो जाते हैं; अध्यवसाय अशिथिल हो जाता है और महामाया के श्री चरणों में अखण्ड विश्वास हो जाता है—तब उद्देश्य की सफलता भी निश्चित हो जाती है।

—अज्ञात

दृढ़ संकल्प एक किले के समान है जो कि भयंकर प्रलोभनों से हमारी रक्षा करता है।

—महात्मा गांधी

हमारे मन में जो संकल्प उत्पन्न होते हैं, उन्हें बाहर स्थापित किए विना नहीं रहते।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (तीन मंजिल)

दृढ़ संकल्प एक गढ़ के समान है जो कि भयंकर प्रलोभनों से हमको वचाता है, दुर्बल और डाँवाडोल होने से वह हमारी रक्षा करता है।

—महात्मा गांधी

दृढ़ संकल्प में जीवन-सिद्धि है। जो वाधाओं से नहीं डरता वह ही कुछ करता है।

—जैनेन्द्र (जै० क० भाग २)

संकल्प ही आदमी का वल है। वह वल शंका या संशय की राह से वूँद-वूँद आदमी से रिसता रहता है।

—जैनेन्द्र (ये और वे)

संकल्प स्वतंत्र नहीं होता—वह भी कार्यकारण से वँधा एक तत्त्व है। लेकिन संकल्प के पीछे कुछ है, जो स्वतंत्र है।

—स्वामी विवेकानंद

तन जिसका हो मन और आत्मा मेरा है,
चिन्ता नहीं वाहर उजेला या अंधेरा है।
चलना मुझे है वस अन्त तक चलना,
गिरना ही मुख्य नहीं, मुख्य है संभलना।
फिर भी उठूँगा और वढ़ के रहूँगा मैं,
नर हूँ पुरुप हूँ मैं चढ़के रहूँगा मैं।

—मैथिलीशरण गुप्त (नहुष)

संगति

संगति सुमति न पावई, परै कुमति के वंध्र।
राखो मेलि कपूर में, हींग न होय सुगंध॥

—बिहारी

शठ सुधरहि संत संगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई॥

—तुलसीदास

संगति करती है असर, यह जानो सब कोय।
जाते हैं जब बाग में, बाग बाग दिल होय॥

—रसिकेश

सत्पुरुषों के संग से, तुच्छ श्रेष्ठ हो जाय।
यसू जन्म के योग से, लघु दिन बड़ा कहाय॥

—रसिकेश

साधु जन नो संग जो करिये, चढ़े ते चौगुणो रंग रे।
साकट जनन तो संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे॥

—मीराबाई (पदावली)

मुझे बताइये आपके संगी-साथी कौन हैं और मैं बता दूंगा कि आप कौन हैं।

—गेटे

बुरे साथी हमें नरक में जाने के लिए निमन्त्रित और प्रलोभित करते हैं।

—फील्डिंग

सत संगत के वास सों, अवगुन हू छिपि जात।
अहिर धाम मदिरा पिवै, दूध जानियै तात॥

—विदुर

असत संग के वास सों, गुन अवगुन ह्वै जात।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सबहि बुझात॥

—विदुर

संकोच

प्रेममय आग्रह संकोच का लंगर उखाड़ फेंकता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

कतिपय मनुष्यों को अपनी प्रशंसा सुनने से जितना संकोच होता है, उतना ही किसी दूसरे की प्रशंसा करने से होता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

पराई स्त्री को घूरने में किसी मर्द को संकोच नहीं होता।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

हम मोह और संकोच में पड़कर अपने जीवन के सुख और शांति का होम कर देते हैं।

—प्रेमचन्द (गबन)

जो मनुष्य इतना विचारहीन हो कि अपनी स्त्री को त्याग दे, मिथ्या सिद्धान्त प्रेम के घमण्ड में बिरादरी का अपमान करे, अपनी असाधुता को प्रजा भक्ति का रंग देकर भाई की गर्दन पर छुरी चलाने में संकोच न करे, उससे धार्मिक विषय में पूछना व्यर्थ है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

संगठन

संगठन संभव तभी, जब पक्ष दोनों तुल्य हों।
आज तक जुड़ते न देखा, गर्म लोहा सर्द से॥

—रसिकेश

वृथा हैं 'बीवी' व्यर्थ 'गुलाम'
न होता दहलों से कुछ काम,
हमें है उन एकों की चाह
पराजित होते जिन से 'शाह'।

—रामेश्वर करण (चिंगारी)

फूट वैर को दूरि करि बाधि कमर मजबूत।
भारत माता के बनो भ्राता पूत सपूत।।
कव लौं दुख सहिहौं सबै, रहिहौं वने गुलाम।
पांइ मूढ़ कालो अरघ सिक्षित काफिर नाम।।
निज भाषा निज धरम निज मान करम व्यौहार।
सबै बढ़ावहु वेगि मिलि कहत पुकार-पुकार।।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

सबसे पहले हमें अपनी जाति की आध्यात्मिक और लौकिक शिक्षा का भार ग्रहण करना होगा। तुम्हें इस विषय पर सोचना-विचारना होगा, इस पर तर्क-वितर्क और आपस में परामर्श करना होगा, दिमाग लगाना होगा और अंत में, उसे कार्यक्रम में परिणत करना होगा। तब तक जाति का उद्धार होना असम्भव है और अब इसके लिए आवश्यकता है एक संगठन की।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

संगीत

संगीत से मानव ही न मोहते,
विमुग्ध होते मृग भी सुने गए,
पयोद ही हैं घिरते न व्योम में,
प्रदीप भी हो उठते प्रदीप्त हैं।

—अनूप (वर्द्धमान)

संगीत में क्रूर हृदय को भी शांत करने का जादू है।

—जेम्स ब्रम्सटन

संगीत मानव की विश्वव्यापी भाषा है।

—लांगफेलो

संगीत टूटे हुए हृदय की औषध है।

—हन्ट

संगीत को फरिश्तों की भाषा ठीक ही कहा है।

—कार्लाइल

संगीत ही सिर्फ इन्द्रिय सुख है जिसमें कोई बुराई नहीं होती।

—जानसन

संगीत की कसौटी यही है कि जड़ दीप उससे जल उठे।

—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है—जिस दिल के दरिया को संगीत की वायर तरंगित नहीं कर देती, समझो कि उस दिल से शैतान भी डरता है।

—सादी

संगीत द्वारा मानव जितनी जल्दी और सुगमता से अपने इष्टदेव में तन्मय हो जाता है वैसा साधन दूसरा नहीं है। जीवात्मा तथा परब्रह्म की जिस एकता के लिए योगीजन अपने रक्त-माँस को सुखा देते हैं, वह संगीत द्वारा सहज में ही प्राप्त हो सकती है।

—अज्ञात

संगीत ऐसा होना चाहिए कि दिल पर असर पड़े। जिस गाने से मन में भक्ति, वैराग्य, प्रेम और आनन्द की तरंगें न उठें, वह संगीत नहीं है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

संगीत के आनंद में विस्मृति है; पर वह विस्मृति कितनी स्मृतिमय होती है; अतीत को जीवन और प्रकाश से रंजित करके प्रत्यक्ष करने की शक्ति के सिवा और कहाँ है ?

—प्रेमचन्द (कामना तरु)

सच्चे अनुरणन और हार्दिक वेदना के विना संगीत में असर और विरक्ति असम्भव है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

संगीत में पशु-पक्षियों को भी वश में करने की क्षमता होती है।

—अज्ञात

सुरम्य संगीत रात की नीरवता में ही सुनाई देता है।

—प्रेमचन्द (कामना तरु)

संगीत से हृदय में पवित्र भाव पैदा होते हैं। जब से संगीत का प्रचार कम हुआ, हम लोग भावशून्य हो गए और इसका सबसे बड़ा असर हमारे साहित्य पर पड़ा है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

वेदना के सुरों में ही स्वर्गीय संगीत की सृष्टि होती है।

—अज्ञात

संगीत आत्मा की प्रतिदिन की मलिनता को दूर कर देता है।

—ओवर वेच

विश्व मुझसे चित्रों में बात करता है, मेरी आत्मा संगीत में उत्तर देती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मधुर संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है।

—महात्मा गांधी

हमारे यहाँ भगवान् भी बिना तो मुरली या डमरू के पूरे नहीं समझे गये हैं, मानव का तो प्रश्न ही क्या है। यह अकारण ही नहीं है कि विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के हाथ में साथ-साथ वीणा भी वतायी जाती है।

—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

संगीत से क्रोध मिट जाता है।

—महात्मा गांधी

मनोव्यथा जब असह्य और अपार हो जाती है, जब उसे कहीं त्रण नहीं मिलता, जब वह रुदन और क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नहीं पाती, तो वह संगीत के चरणों में जा गिरती है।

—प्रेमचन्द

संग्रह

सच्चे संस्कृति-सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नहीं, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसकी कमी है। जैसे-जैसे परिग्रह कम करते हैं वैसे-वैसे सच्चा सुख और सच्चा संतोष बढ़ता है।

—महात्मा गांधी

जल बिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
सः हेतुः सर्वविद्यानाम्धर्मस्य चधनस्यच ॥

(एक-एक बूंद से जैसे धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है वैसे ही सभी विद्याओं, धर्म और धन का भी थोड़ा-थोड़ा संचय करने से विशाल संग्रह हो जाता है।)

—चाणक्य

संघर्ष

संघर्ष हमको जीवन में आगे बढ़ने की सही प्रेरणा देता है। जो लोग संघर्ष से घबराते हैं, उन्हें चाहिए कि वे जंगल की राह लें।

—अज्ञात

संघर्ष ही जीवन है।

—अज्ञात

संघर्षहीन जीवन और मृत्यु में अन्तर केवल इतना है कि हम सांस लेते हैं।

—अज्ञात

यदि हो जाए ज्ञान यह सब को,
सबका हित है एक यहाँ।
वे भ्रम-मूलक हैं मनुजों में,
जो हैं भेद अनेक यहाँ॥
तो हो जाय अन्त निश्चय ही,
संघर्षों का भूतल में।
सब मानव खिल उठें प्रेम से,
शतदल के समान जल में॥

—ठाकुर गोपालशरणसिंह (जगदालोक)

सन्त

संत हृदय नवनीत समाना।

—तुलसीदास (मानस-उत्तर०)

नहिं शीतल है चन्द्रमा, हिम नहिं शीतल होय।
कबिरा शीतल संत जन, नाम सने ही सोय॥

—कबीर

संत न छोड़ै संतई, कोटिक मिलैं असंत।
मलय भुजंगहिं बेधिया, सीतलता न तजंत॥

—कबीर

बिनु हरि कृपा मलहिं नहिं संता।

—तुलसीदास (मानस-सुन्दर०)

संत कष्ट सहि आपुही, सुखी करै जु समीप।
आप जरै तऊ और को, करै उजेरो दीप॥

—कवि वृन्द

बूंद अघात सहैं गिरि कैसे। खल के वचन संत सह जैसे॥

—तुलसीदास

निज परिताप द्रवइ नवनीता।
पर दुख द्रवहि संत सुपुनीता॥

—तुलसीदास (मानस-उत्तर०)

संत सासना सहत हैं, जैसे सहत कपास॥
जैसे सहत कपास, नाय चरखी में औंटै।
रूई धर जब तुनै हाथ से दोउ निभोटै।
रोम रोम अलगाय पकरि के धुनिया धूनी।
पिउनी नहं दै कात सूत ले जुलहा धूनी।
धोबी भट्टी परधरी, कुन्दीगर मुगरी मारी।
दरजी टूक टूक फारि जोरिकै किया तयारी।
पर स्वारथ के कारने दुख सहै 'पलटूदास'।
संत सासना संहत हैं, जैसे सहत कपास॥

—पलटूदास (संत सुधासार)

हर मजहब में जितने संत हुए हैं उन सबका हृदय एक है; आपस में जो भेद दिखाई देते हैं, वे अन्य लोगों ने पैदा किए हैं, संतों ने नहीं।

—कुरान

संता हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः

(संदेहप्रद परिस्थितियों में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ प्रमाण बनती हैं।)

—कालिदास

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पल कोमलम्।
आपत्सु च महाशैल शिला संघात कर्कशम्॥

(संतों का मन समृद्धि के समय कमल से भी अधिक कोमल होता है, किन्तु आपत्ति में उनका मन पर्वत के पत्थर से भी अधिक कड़ा हो जाता है।)

—भर्तृहरि

पारस में अरु संत में, बड़ो अंतरो जान।
वह लोहा सेला करै, वह कर आपु समान ॥

—अज्ञात

दुःखी और दीन पुरुषों के लिए संत ही परम आश्रय है।

—महाभारत

संतान

सुत-हित सोचत जो पितुमाता। सोइ अपत्यहिं क्षेम प्रदाता ॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

हैं बच्चों के बच्चे व्यर्थ, न लो सुफल भी कच्चे व्यर्थ।
वनो संयमी बनो समर्थ, अपने और वंश के अर्थ ॥
शिक्षा दीक्षा रक्षा-योग्य, प्राप्त करो धन बल आरोग्य।
तव उत्पन्न करो संतान, तभी सुगति होगी मतिमान ॥
सर्वदमन थे जहाँ प्रस्तुत, वहीं—अरे चुप आया भूत ॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथितं यशः।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरूच्चार एव सः ॥

(दान, तप, शौर्य, विद्या और सम्पत्ति की दृष्टि से जिसके यश का लोग बखान नहीं करते वह संतान अपनी माता के मल के समान है।)

—अज्ञात

संतान आत्मा की प्रतिमूर्ति है!

—अज्ञात

संतान वह सबसे कठिन परीक्षा है जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए गढ़ी है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

संतान को विवाहित देखना बुढ़ापे की सबसे बड़ी अभिलाषा है।

—प्रेमचन्द

पुत्र रत्न के सामने संसार की सम्पदा कोई चीज़ नहीं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

संतान किस को प्यारी नहीं होती? कौन उसे सुखी नहीं देखना चाहता, पर उस पर अपना काबू भी होना चाहिए।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

मनुष्य का उद्धार पुत्र (संतान) से नहीं, अपने कर्मों से होता है। यश और कीर्ति भी कर्मों ही से प्राप्त होती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

संतान ही आकांक्षाओं का स्रोत, चिन्ताओं का आधार, प्रेम का बंधन और जीवन का सर्वस्व है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

औलाद और खानदान की मुहब्बत अपनी नजात की फिक्र से ज्यादा है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

औलाद की कसर खुदा की मार है, इस पर रिश्तेदारों का वटेर टिड्डियों का दल है, जो आन की आन में दरख्त ठूँठ कर देता है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

माँ-बाप की कामना तो यही होतीं है कि उनकी संतान को कोई कष्ट न हो।

—प्रेमचन्द (कर्मभूमि)

सन्तान होने से माँ-बाप की जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। जब तक मनुष्य में यह सामर्थ्य न हो कि वह उसका भली प्रकार पालन-पोषण और शिक्षण आदि कर सके तब तक उसकी संतान से देश, जाति और निज का कुछ भी कल्याण नहीं हो सकता।

—प्रेमचन्द (सौत)

जिस तरह हीरे की खान से हीरा और पत्थर की खान से पत्थर निकलता है, उसी तरह योग्य माता-पिता ही योग्य संतान उत्पन्न कर सकते हैं।

—अज्ञात

संतोष

संतोष-सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है।

—प्रेमचन्द (बूढ़ी काकी)

जैसे हरा चश्मा लगा लेने से सभी वस्तुएँ हरी-हरी दीखती हैं उसी प्रकार तोष धारण कर लेने पर सारा संसार आनन्द रूप ही दिखाई पड़ता है।

—स्वामी भजनानन्द

गोधन, गज धन, बाजिधन, रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान ।।

—कबीर

संतोष से बढ़कर अन्य कोई लाभ नहीं। जो मनुष्य इस विशेष सद्गुण से सम्पन्न है वह त्रिलोक में सबसे बड़ा धनी व्यक्ति है।

कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिन।
जल बिन चलइ कि नाव, कोटि जतन रचि पचि मरिय ।।

—तुलसीदास

बिनु संतोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं।

—तुलसीदास

संतोष से मीठी संसार में कोई वस्तु नहीं।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

चांह गई चिन्ता मिट्टी, मनवाँ बेपरवाह।
जिन को कछू न चाहिए, सोई सहंसाह॥

—कबीर

मुझे तो बाजरे की पूरी बिस्कुट के चौथाई हिस्से से कहीं अच्छी मालूम होती है। क्षुधा तो तृप्त हो जाती है, जो जीवन का यथार्थ उद्देश्य है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सुख का मूल संतोष है। एक आदमी जल और स्थल के सारे रत्न पाकर गरीब रह सकता है, दूसरा फटे वस्त्रों और रूखी रोटियों में भी धनी हो सकता है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सुख संतोष से प्राप्त होता है। विलास से सुख कभी नहीं मिल सकता।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

अगर संतोष मूर्खता है, तो संसार के नीति ग्रन्थ, उपनिषदों से लेकर कुरान तक मूर्खता के ढेर हो जायेंगे। संतोष से अधिक और किसी तप की महिमा नहीं पायी गई है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

संतोष को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। इस मंत्र से कठिन से कठिन समय में भी मन विचलित नहीं होता।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

संतोष दरिद्रता का दूसरा नाम है।

—प्रेमचन्द (शांति)

आत्माभिमान संतोष का प्रसाद है।

—प्रेमचन्द (दफ्तरी)

गुरू प्रसाद संतोष गज, जै नर बैठा जाय।
जग लालच कूकर जियाँ, लात सकै न लगाय॥

—बाँकीदास (ग्रंथावली)

जिय संतोष विचारिये, होय जू लिख्यो नसीब।
खल गुरु काच कथीर सौं, मानत रली गरीब॥

—वृन्द (सतसई सप्तक)

असंतोषः परं दुःखं संतोषः परम् सुखं।
सुखार्थीपुरुषस्तस्मात्संतुष्टः सततं भवेत॥

(असंतोष ही सब से बढ़कर दुःख है और संतोष ही सबसे बड़ा सुख है; अतः सुख के इच्छुक पुरुष को सदैव सन्तुष्ट रहना चाहिए।)

—महर्षि गौतम

संतोषामृततृप्तानाम् यत्सुखं शान्त चेतसाम्।
न च तद्धन लुब्धानामितश्चेश्च धावताम्॥

(संतोष रूपी अमृत से जो मनुष्य तृप्त होते हैं, उन्हें जो शांति और सुख होता है वह धन के लोभियों को, जो इधर-उधर भागा करते हैं, नहीं प्राप्त होता।)

—चाणक्य

संतोष स्वाभाविक धन है, विलासिता कृत्रिम निर्धनता है।

—सुकरात

संतोष यद्यपि कड़ुआ वृक्ष है, तथापि इसका फल बड़ा ही मधुर और हितकर है।

—मौलाना रूमी

मानव को स्वस्थ रखने के लिए संतोष एक सर्वोत्तम भोज्य पदार्थ है तथा रोगी को नीरोग रखने के लिए सर्वोत्तम औषध है।

—डब्ल्यू० सीकर

संतोष मुकुट पहनाता है, जहाँ भाग्य उससे वंचित रखता है।

—फोर्ड

संतोष साम्राज्य से भी बढ़कर है।

—कहावत

सर्वोत्कृष्ट मानव को ही सर्वोत्तम संतोष होता है।

—स्पेन्सर

संतोष वह पारस पत्थर है जो जिस वस्तु का स्पर्श करता है उसे स्वर्ण बना देता है।

—कहावत

एक हिन्दू के जीवन में संतोष की मात्रा स्वाभावतः अधिक होती है। वह सुन्दर परलोक के विचार से भूखा रहकर भी संतुष्ट रहने में अपना गौरव समझता है।

—अज्ञात

शान्ति तुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखं।
न तृष्णायाः परो व्याधिन च धर्मो दयापरः॥

(शांति के समान दूसरा तप नहीं है, न संतोष से परे सुख है, तृष्णा से बढ़कर दूसरी व्याधि नहीं है, न दया से अधिक धर्म है।)

—चाणक्य

क्रोधो वैवस्वतो राजा तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुधा धेनुः संतोषो नन्दनं वनं॥

(क्रोध यमराज है और तृष्णा वैतरणी नदी है, विद्या कामधेनु गाय और संतोष देवराज इन्द्र का नन्दन वन है।)

—चाणक्य

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति परः पृथिव्याम्।
विभूषणं शील समं न चान्तत्संतोष तुल्यं धनमास्ति नान्यत्॥

(दान के समान दूसरी विधि नहीं है, लोभ के समान दूसरा शत्रु नहीं है, शील के समान दूसरा भूषण नहीं है और संतोष के समान दूसरा धन नहीं है।)

—पंचतंत्र

प्रभु सेवा के लिए संतोष की एक रत्ती, शोक के एक तोले के समान हैं।

—फुलर

संतोष परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत्।
संतोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्ययः॥

(संतोष से परमानन्द की प्राप्ति होती है। सुख चाहने वाले को संयम होना चाहिए। सुख का मूल संतोष है और दुःख का असंतोष।)

—मनुस्मृति

सन्देह

सन्देह हमारा शत्रु है, वह हमारे हृदय में डर पैदा करता है, जिससे हमें जिस पर विजय प्राप्त करने का पूरा भरोसा होता है, उसी के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ता है।

—शेक्सपियर

जब मनुष्य को संदेह अधिक होता है, तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

—अज्ञात

मानव-प्रकृति का यह गुण है कि जब थोड़ा-सा भी संदेह हो जाता है तो साधारण से भी साधारण घटनाएँ उस संदेह का समर्थन करने लग जाती हैं।

—अज्ञात

सन्देह पानी का बुलबुला नहीं है जो क्षण में भंग हो जाता है। सन्देह तो धूमकेतू की रेखा है जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक फैली रहती है। और धूमकेतू जानते हो किस बात का प्रतीक है? भय का, आशंका का; अमंगल का।

—डॉ० रामकुमार वर्मा

संदेह नैराश्य का भ्राता है।

—श्रोरेली

दुःखी आत्मा दूसरों की नेकनीयती पर सन्देह करने लगती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

किसी पर सन्देह करने से अपना चित्त मलिन होता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जो आदमी मूंग की दाल और मोटे आटे के दो फुलके खाकर भी नमक सुलेमानी का मोहताज हो, उसके छैलपन पर उन्माद का सन्देह हो तो आश्चर्य ही क्या है?

—प्रेमचन्द (निर्मला)

शक करने से आदमी शक्की हो जाता है और तब बड़े-बड़े अनर्थ हो जाते हैं।

—प्रेमचन्द (लांछन)

इतना है उत्तप्त धरातल सन्देहों का,
जहाँ कि हर विश्वास पिघलकर बह जाता है।

—बुद्धमल (आवर्त)

संन्यास

गीता का प्रेरक मंत्र यह कहा जा सकता है—"सब धर्मों को तजकर मेरी शरण ले।" यह सच्चा संन्यास है, परन्तु सब धर्मों के त्याग का मतलब सब कर्मों का त्याग नहीं है। परोपकार के कर्मों में भी जो सर्वोत्कृष्ट कर्म हों उन्हें ईश्वर के अर्पण करना और फलेच्छा का त्याग करना, यह सर्वधर्म-त्याग या संन्यास है।

—महात्मा गांधी

संन्यास स्वार्थ है, सेवा-त्याग है।

—प्रेमचन्द

काम्यानां कर्मणाम् न्यासं संन्यासं कवयोः विदुः।

(कामना से जनित कर्मों के त्याग को ज्ञानी संन्यास के नाम से जानते हैं।)

—श्रीकृष्ण (भगवद्गीता)

संन्यासी

संन्यासी के लिए सेवा कार्य छोड़ने की जरूरत नहीं है, अहंकार और आसक्ति छोड़ने की आवश्यकता है।

—विनोबा भावे

कर्म-मात्र का त्याग गीता के संन्यास को भाता नहीं। गीता का संन्यासी अति कर्मी होने पर भी अति अकर्मी है।

—महात्मा गांधी

संन्यासी वह यात्री है जिसकी अभिलाषा समाज से पार हो जाए। न उसे अब समाज की मान्यता चाहिए, न सत्ता चाहिए। समाज की अवज्ञा भी अब उससे नीची रह जाती है। मानापमान संसारी के लिए बहुत महत्व की बात है, संन्यासी को वह छूता भी नहीं है।

—जैनेन्द्र (इतस्ततः)

जो संन्यासी कंचन के बारे में सोचता है, उसकी इच्छा करता है, वह आत्म-घात करता है।

—स्वामी विवेकानंद

सम्पादक

सम्पादक की सबसे शानदार मौत यही है कि वह न्याय और सत्य की रक्षा करता हुआ अपना बलिदान कर दे।

—प्रेमचन्द (गोदान)

आप सम्पादकों के कर्त्तव्य को नहीं मानते। हम पब्लिक के सामने अपना दिल खोलकर रखना अपना धर्म समझते हैं। अपने मनोभावों को गुप्त रखना हमारे नीति शास्त्र में पाप है। हम न किसी के मित्र हैं न किसी के शत्रु, हम अपने जन्म के मित्रों को एक क्षण में त्याग देते हैं और जन्म के पशुओं से एक क्षण में गले मिल जाते हैं। हम सार्वजनिक विषय में किसी को क्षमा नहीं करते, इसलिए कि हमारे क्षमा करने से उनका प्रभाव और भी हानिकारक हो जाता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

पत्र-सम्पादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतन्त्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रि-मंडल पर आक्रमण करता है, परन्तु ऐसे अवसर आते हैं जब वह स्वयं मंत्रि-मंडल में सम्मिलित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्यायपरायण हो जाती है, इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान है।

—प्रेमचन्द (पंच परमेश्वर)

सम्पादक का जीवन एक दीर्घ विलाप है, जिसे सुनकर लोग दया करने के वदले कानों पर हाथ रख लेते हैं। वेचारा न अपना उपकार कर सके, न औरों का। पब्लिक उससे आशा तो यह रखती है कि हरएक आन्दोलन में वह सबसे आगे रहे, जेल जाय, मार खाय, घर के माल अस-वाब की कुर्की करवाये, यह उसका धर्म समझा जाता है; लेकिन उसकी कठिनाइयों की ओर किसी का ध्यान नहीं हो तो सब कुछ···। उसे हरएक विचार, हरेक कला में पारंगत होना चाहिए, लेकिन उसे जीवित रहने का अधिकार नहीं।

—प्रेमचन्द (गोदान)

सम्पादक अपने महत्व को भूलकर जनता के विवाद प्रेम से लाभ उठाने लगते हैं।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

कर्त्तव्य के आगे व्यक्ति कोई चीज नहीं। सम्पादक अगर अपना कर्त्तव्य पूरा न कर सके तो उसे इस आसन पर बैठने का कोई हक नहीं है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

पत्र का सम्पादक परम्परागत नियमों के अनुसार जाति का सेवक है। वह जो कुछ देखता है, जाति को विराट दृष्टि से देखता है। वह जो विचार करता है, उस पर भी जातीयता की छाप लगी होती है। नित्य के विस्तृत विचार क्षेत्र में विचरण करते रहने से व्यक्ति का महत्व उसकी दृष्टि में अत्यन्त संकीर्ण हो जाता है, वह व्यक्ति को क्षुद्र, तुच्छ, नगण्य कहने लगता है। व्यक्ति की जाति पर बलि देना उसकी नीति का प्रथम अंग है।

—प्रेमचन्द (डिग्री के रुपये)

सम्पत्ति

बेईमानी से एकत्रित की हुई सम्पत्ति ऐसी है जैसी मृग के लिए कस्तूरी।

—अज्ञात

सा लक्ष्मी रूप कुरुते यथा परेषाम्।
(वही सम्पत्ति सम्पत्ति है जो दूसरों का उपकार करे।)

—भारवि

आपन्नार्तिप्रशमनफला: सम्पदो ह्युत्तमानाम्।
(उत्तम मनुष्यों की सम्पत्ति का मुख्य प्रयोजन यही है कि औरों की विपत्ति का नाश हो।)

—कालिदास

राष्ट्रों की सम्पत्ति तो मनुष्य है—रेशम, कपास, अथवा सोना नहीं।

—रिचार्ड हॉवे

आपत्ति में पड़े हुए मनुष्यों की पीड़ा हर लेना ही सत्पुरुषों की सम्पत्ति का सच्चा फल है। सम्पत्तिमान् होकर भी मानव यदि विपत्ति-ग्रस्तों के काम न आया तो उसकी सम्पत्ति किस काम की।

—कालिदास

मनुष्यों में उत्साह भरने की अपनी योग्यता को ही मैं अपनी सबसे बड़ी सम्पत्ति समझता हूँ और मानव के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका दवास, प्रशंसा एवं प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है।

—चार्ल्स श्वेव

सम्पत्ति भरम गँवाइ के, हाथ रहत कछु नाहिं।
ज्यों रहीम ससि रहत है, दिवस अकासहिं माहिं॥

—रहीम

जहाँ सम्पत्ति है वहीं सुख है, परन्तु सम्पत्ति के भेद से ही सुख का भी भेद है—दैवी सम्पत्ति वालों परमात्मा सुख, आसुरी वालों को आसुरी सुख और नरक के कीड़ों को नारकीय सुख।

—हनुमानप्रसाद पोद्दार

पवित्रता वह सम्पत्ति है जो प्रेम के वाहुल्य से पैदा होती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना।

—तुलसीदास

तौ लहि सोग बिछोह का, भोजन भरा न पेट।
पुनि बिसरन भा सुमिरना, जब संपति पै भेंट॥

—मलिक मुहम्मद जायसी (जायसी ग्रन्थावली)

सागर याचक नहिं बने, रहे नीर से पूर्ण।
निज को योग्य बनाइये, आयँ सम्पदा पूर्ण॥

—रसिकेश

संयम

निश्चय ही हम सब मनुजों को शिश्नोदर की व्याधि मिली,
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह की निश्चय हमें उपाधि मिली।
किन्तु मनुज ही को तो संयम रूपी अमित प्रसाद मिला।
मानव के ही हिम-सर में तो शतदल चित्त समाधि मिली॥

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (हम विषपायी जनम के)

जिन राखा संयम सदा, वह औषधि क्यों खाय ?
अपना मन वश में किया, कभी न माँगन जाय।

—मेलाराम (शिक्षा सहस्री)

जो अपने ऊपर शासन कर सकते हैं, वही दूसरों पर भी करते हैं।

—हैजलिट

जो आत्मसंयमी हैं वही सर्वशक्तिमान् हैं।

—सेनेका

संयम ही सीमा की तर्जनी से असीम का निर्देश करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सृष्टि)

विद्यार्थी अवस्था में संयम की महान् विद्या सीख लेनी चाहिए। जब आप संयम की शक्ति का संग्रह कर लेंगे तो एकाग्रता भी, जो जीवन की एक महान् शक्ति है, पा लेंगे।

—विनोबा भावे

बलवान् बनने के लिए एक और जरूरी बात है संयम। मैं इन्द्र हूँ, ये इन्द्रियाँ मेरी शक्ति हैं।

—विनोबा भावे

डर से जो होता है वह संयम नहीं है। संस्कृति संयम का फल है।

—जैनेन्द्र

जो आत्मसंयमी नहीं है वह स्वतन्त्र नहीं है।

—पाइथागोरस

किसी प्रिय लगनेवाली किन्तु साथ ही अनिष्ट लगनेवाली चीज को तजने का अभ्यास संयम है।

—जैनेन्द्र (प्रस्तुत प्रश्न)

संयमहीन जीवन विपत्तियों का आगार वन जाता है।

—अज्ञात

संशय

संशय की वेदना आत्मा के लिए सत्य में मुक्तिदान करनेकी वेदना है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संशय)

जिस दिन संशय का क्रन्दन हम में सत्य हो उठेगा उस दिन हम सम्प्रदाय का मत, दर्शन का तर्क और शास्त्र का वाक्य लेकर आराम से नहीं बैठेंगे।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संशय)

वड़ी वस्तु को जब छोटे रूप में देखा जाता है, तभी संशय उत्पन्न होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

संशय वड़े घातक हैं। ये हमारी उत्पादक शक्ति को नष्ट कर देते हैं—हमारी अभिलाषा को पंगु और शक्तिहीन बना देते हैं।

—स्वेट माडेन

जहाँ जाँच-पड़ताल से इंकार कर दिया जाता है, वहाँ संशय गुप्त राह से उपस्थित हो जाता है।

—जोवेर

मनुष्य संदेह करने के लिए नहीं, वरन् उपासना करने के लिए बनाया गया है।

—यंग

जो अज्ञानी, श्रद्धारहित और संशयवान् है। उसका नाश होता है। संशयवान् के लिए न यह लोक है, न परलोक है, उसे कहीं सुख नहीं है।

—श्रीकृष्ण (भगवद्गीता)

संसार

ऐसा यह संसार है, जैसा सेमर फूल।
दिन दस के व्योहार में, झूठे रंग न भूल ।।

—कबीर (कबीर ग्रंथावली)

तो जग क्या मिथ्या कहि जाइ। जहाँ तरै तुम्हरे गुन गाइ।
प्रेम भक्ति विनु मुक्ति न होइ। नाथ कृपा करि दीजै सोइ ।।

—सूरदास (सूरसागर)

मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया।
मिथ्या है यह देह कहौ क्यों हरि विसराया ।।

—सूरदास (सूरसागर)

जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों जिह्वा मुख माँहि।
घीव घना भच्छन करै, तो भी चिकनी नाहि ।।

—चरणदास

मैं तोहि अत्र जान्यौ संसार।
देखत ही कमनीय, कछु नाहिन पुनि किये विचार।
ज्यों कदली तरु-मध्य निहारत, कबहूँ न निकसत सार ।।

—तुलसीदास (विनयपत्रिका)

यह संसार हाट का लेखा, सब कोइ बनिजहि आया।
जिन जस लाद्‌या तिन तस पाया, मूरख मूल गंवाया ।।

—नामदेव

यह सारा संसार है उस प्रभु का परिवार।
सबसे रखना चाहिए प्रेम पूर्ण व्यवहार ।।

—मैथिलीशरण गुप्त (काबा और कर्बला)

दु:ख सुख में उठता गिरता
संसार तिरोहित होगा।
मुड़कर न कभी देखेगा
किसका हित अनहित होगा॥

—जयशंकर प्रसाद (आंसू)

मैं समझ्यौ निरधार, यह जगु काँचो काँच सो।
एकै रूपु अपार, प्रतिबिंबित लखियतु जहाँ॥

—बिहारी रत्नाकर

संसार में कोई चीज बिल्कुल बुरी नहीं है। यदि यहाँ शैतान है तो ईश्वर भी है अन्यथा वह होता ही नहीं।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

है असार संसार नहीं।
यदि उसमें है सार नहीं तो सार नहीं है कहीं॥
जहाँ ज्योति है परम दिव्य, दिव्यता दिखाई वहीं।
क्या जगमगा नहीं ए बातें तारक-चय ने कहीं।
दिव्य दृष्टि सामने आवरण-भीतें सब दिन वहीं।
अधिक क्या कहें, मुक्तिमुक्त मानव ने पायी यहीं॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (मर्मस्पर्श)

सुख न है संसार में, वह है दुखों की एक विस्मृति।
मध्य में है एक क्षण, इस ओर अथ, उस ओर है इति॥

—रामकुमार शर्मा (आकाश गंगा)

दुनिया क्या है वेश्यालय है,
कहाँ रहे अब इज्जत वाले।
यहाँ वही रह सकता है जो
पीता बेशर्मी के प्याले।

—हरिकृष्ण प्रेमी (अग्नि गान)

जो कहते हो जगत महामाया है भीषण भ्रम है।
इस विचार में तुमको ही धोखा है भ्रांति विषम है।।
है यह कर्मभूमि जीवों की यहाँ कर्म-च्युत होना,
धोखे में पड़ना अलभ्य अवसर से है कर धोना।

—रामनरेश त्रिपाठी (पथिक)

संसार पापस्थली नहीं, पुण्यभूमि है।

—जैनेन्द्र (जैनेन्द्र कहा० भाग ६)

विपुल वैज्ञानिक आविष्कार, दार्शनिक सामाजिक सिद्धान्त,
समन्वय के सांस्कृतिक प्रयत्न, मिटा सकते न जगत का ध्वान्त।
दौड़ता चेतन में भूकम्प, उमड़ता अवचेतन में ज्वार,
प्रथम वदले भीतरी मनुष्य, वाहरी वदले तव संसार।।

—सुमित्रानन्दन पंत (लोकायतन)

धूप छाँह यह जग, आशा में धुली निराशा,
राग द्वेष सुख दुख संग वंधी अमिट अभिलाषा।
विरह मिलन संघर्ष शांति जग की परिभाषा,
जन्म मरण सज जरा ग्रथित रे जीवन श्वासा।
पाप-पुण्य औ मिथ्या सत्य जगत में गुंफित,
ज्योति तमस द्वन्द्वों से निश्चय संस्कृति निर्मित।

—सुमित्रानन्दन पंत (स्वर्ण किरण)

या जग की रोटीन तें सूझ तु अलख अनंत।
मिथ्या ताको कहत ए निलज निठल्ले संत।।

—वियोगी हरि (वीर सतसई)

आदि में छिप जाता अवसान,
अंत में बनता नव्य विधान;
सूत्र ही है क्या यह संसार,
गुथे जिस में सुख दुःख जयहार?

—महादेवी वर्मा (आधुनिक कवि)

'व्यास' न सुख संसार में, जो सिर छत्र फिरात।
रैन घनी धन देखियत, भोर नहीं ठहरात॥

—व्यास वाणी

'कामयाब' जगधंधा, सपन समान।
दुख-दरिद्र-सुख संपत्ति, जाइ निदान॥

—नूर मुहम्मद (अनुराग बाँसुरी)

यह संसार एक सुन्दर पुस्तक है, किन्तु जो इसे पढ़ नहीं सकता उसके लिए व्यर्थ है।

—गोल्डोनी

तुम शांत संसार कभी नहीं पा सकते, जब तक कि मनुष्यजाति से राष्ट्र प्रेम निकाल नहीं फेंकते।

—बर्नार्ड शा

सभी सम्भव संसारों में यह संसार सर्वोत्तम है और इसमें सभी वस्तुएँ सर्वोत्तम के लिए हैं।

—वाल्टेयर

जिस संसार में दैववश प्राप्त अपनी देह और फल-पुष्पादि अवयवों से वारम्बार उपकारी वृक्ष भी कुठारों से काटा जाता है, ऐसे कृतघ्न संसार से उपकार की क्या आशा है ?

—अज्ञात

जब मनुष्य मुस्कराया तब संसार ने उससे प्रेम किया, जब उसने अट्टहास किया तब संसार उससे भयभीत हो गया।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

संसार में अव्वल नम्बर के चालाक लोग भी कभी-कभी बेढब गलती कर बैठते हैं, नहीं तो यह संसार एकदम मरु भूमि बन जाता, कहीं रस की भाप भी जगह न पाती।

—शरच्चन्द्र (देना-पावना)

यह संसार एक व्यायामशाला है, जहाँ हम अपने आपको बलवान् बनाने के लिए आते हैं।

—स्वामी विवेकानंद

यह संसार प्रचण्ड तूफानों का संसार है; इसको सौन्दर्य-संगीत शान्त किये हुए है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

संस्कार

संस्कार का अर्थ संहार नहीं है जो क्षेत्र-संस्कारक खेत की घासों के साथ अन्न के पौधों को भी उखाड़ देना चाहेगा वह संस्कारक नाम का अधिकारी नहीं।

—हरिऔध

जन्म से मनुष्य शूद्र ही पैदा होता है, किन्तु संस्कार होने से द्विज कहलाता है। जो संस्कार हृदय में बद्धमूल हो जाते हैं, वे जीवन-पर्यन्त साथ नहीं छोड़ते।

—हरिऔध

हो जाता है विश्व प्रकाशित, ज्यों ज्यों सूरज चढ़ता।
उल्लू की आँखों में त्यों-त्यों अंधकार ही बढ़ता॥
बुरा नहीं आलोक, बुरा है आँखों का आधार।
बुरा नहीं है व्यक्ति, बुरा है अंतर का संस्कार॥

—सागरमल (कुछ कलियाँ : कुछ फूल)

विचार जब आचार मे दृढ़ता का रूप धारण कर लेते हैं तभी उन्हें संस्कार कहा जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संस्कार)

प्रत्येक संस्कार कितनी कठिन ग्रंथि है। ज्ञान में उसे कितना ही तुच्छ क्यों न मान लो, व्यवहार में उससे छूटना अति कठिन है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मरण)

संस्कृति

संस्कृति कहीं यहाँ वहाँ रहती है। जहाँ उत्सर्ग है संस्कृति वहाँ से आदर्श प्राप्त करती है।

—जैनेन्द्र (प्रस्तुत प्रश्न)

संस्कृति इस तरह मानव-जाति की वह रचना है जो एक को दूसरे के मेल में लाकर उनमें सौहार्द की भावना पैदा करती है। वह जोड़ती और मिलाती है। उसका परिणाम व्यक्ति में आत्मोपमता की भावना का विकास और समाज का सर्वोदय है।

—जैनेन्द्र (मंथन)

हम जगत् में शून्य भाव से जीयें यह होगी संस्कृति। अहंता से शून्यता की ओर जाना विकार से संस्कार की ओर उठना है।

—जैनेन्द्र (पूर्वोदय)

युग युग के संचित संस्कार, ऋषि मुनियों के उच्च विचार।
धीरों वीरों के व्यवहार, हैं निज संस्कृति के श्रृंगार॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

आंशिक संस्कृति श्रृंगार की ओर दौड़ती है, अपरिमित संस्कृति सरलता की ओर।

—बोवी

विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान ही संस्कृति है।

—मैथ्यू आर्नल्ड

संस्कृति की पूर्णता कहाँ है ? क्या है चरम सभ्यता नर की ?
भौतिक सम्पन्नता मात्र ही, शोभा नहीं मनुज के घर की;
मनो विकार दमन ही केवल मापदंड है चिर-संस्कृति का;
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, भय, शाश्वत रिपु दल है संसृति का;
जब तक अवश रहेंगे ये रिपु, तब तक कहाँ नवल युग जग में ?
बंधन ही बंधन उलझेंगे इस मानवता के पग पग में।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (हम विषपायी जनम के)

जो संस्कृति महान् होती है, वह दूसरों की संस्कृति को भय नहीं देती, बल्कि उसे साथ लेकर पवित्रता देती है। गंगा महान् क्यों है ? दूसरे प्रवाहों को स्वयं में मिला लेने के कारण ही वह पवित्र रहती है।

—साने गुरु

हिन्दू राष्ट्र में आज भी हमारे अन्तर्मन में अत्यन्त गहराई तक जाकर जो हमारे सम्पूर्ण जीवन को व्याप्त किए फैल रही है, उस संस्कृति का यदि मुख्य लक्षण किसी एक शब्द में बताना हो तो वह एकमात्र शब्द है—श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-अद्यावत् से एकदम विपरीत।

—विनायक दामोदर सावरकर

जो जो धर्म ग्रन्थ अपौरुषेय समझे गए हैं उनमें समाविष्ट की गई संस्कृति भी स्वाभाविक रूप से अपरिवर्तनीय समझी जाती है।

—विनायक दामोदर सावरकर

उपासना, मत और ईश्वर सम्बन्धी विश्वास की स्वतन्त्रता भारतीय संस्कृति की परम्परा रही है।

—अटलबिहारी वाजपेयी

संस्कृति की चाहे कोई भी परिभाषा क्यों न हो, किन्तु उसे व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र की सीमाओं में बाँधना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है।

—पं० जवाहरलाल नेहरू

कोई भी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती यदि वह अपने को अन्य से पृथक रखने का प्रयास करे।

—महात्मा गांधी

आज के यूरोप और अमेरिका के जीवन की प्रवृत्तियों की संस्कृति का प्रमुख लक्षण यदि किसी एक शब्द में अपवाद छोड़कर व्यक्त करना हो तो उसके लिए अद्यावत् ही एकमात्र शब्द है।

—विनायक दामोदर सावरकर

स्वभाव की गम्भीरता, मन की समता, संस्कृति के अंतिम पाठों में से एक है और यह समस्त विश्व को वश में करने वाली शक्ति में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न होती है।

—स्वेट मार्डन

भारतीय हिन्दू संस्कृति उच्चतम मानवीय संस्कृति है।

—मदनमोहन मालवीय

भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो सम्पूर्ण मानव के साथ तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पवित्र भावना में निहित है।

—मदनमोहन मालवीय

हिन्दू संस्कृति आध्यात्मिकता की अमर आधार शिला पर स्थित है।

—विवेकानंद

संस्कृति समष्टिगत समान अनुभवों से उत्पन्न होती है।

—डॉ० सम्पूर्णानंद

संस्कृति उस दृष्टिकोण को कहते हैं जिस से कोई समुदाय विशेष जीवन की समस्याओं पर दृष्टिनिक्षेप करता है।

—डॉ० सम्पूर्णानंद

हिन्दू संस्कृति भारतीय संस्कृति है और भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण जगत् की संस्कृति है।

—चक्रवर्ती सी० राजगोपालाचारी

भारतीय संस्कृति कभी किसी एक उपासना पद्धति से वंधी नहीं रही और न उसका आधार प्रादेशिक ही रहा है।

—अटलबिहारी वाजपेयी

सभ्यता शरीर है, संस्कृति आत्मा, सभ्यता जानकारी और भिन्न क्षेत्रों में महान् एवं दुःखदायी खोज का परिणाम है; संस्कृति ज्ञान का परिणाम है।

—श्री प्रकाश

मजहब अथवा क्षेत्र के आधार पर पृथक् संस्कृति की चर्चा तर्क विरुद्ध ही नहीं, प्रत्युत् भयावह भी है, क्योंकि वह राष्ट्रीय एकता की जड़ पर ही कुठाराघात करती है।

—अटलबिहारी वाजपेयी

हिन्दू-संस्कृति या आर्य संस्कृति की कोई विशेषता कही जा सकती है तो वह यही कि उसने स्वार्थसिद्धि की अपेक्षा, परसेवा, समाज सेवा, स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ पर अधिक जोर दिया है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जो मार्ग, जो विधि, जो क्रिया, हमें भगवान की तरफ ले जाती है, वह हिन्दू संस्कृति, आर्य संस्कृति, सज्जन संस्कृति, सुसंस्कृति है; जो हमें उससे विमुख बनाती है, वह अहिन्दू, अनार्य, दुर्जन संस्कृति और कुसंस्कृति है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

आस्तिक भावना और ईश्वर में विश्वास भारतीय संस्कृति का मुख्य अंग है।

—प्रकाशवीर शास्त्री

भारत की एकता का मुख्य आधार है, एक संस्कृति, जिसका प्रवाह कहीं नहीं टूटा। यही इसकी विशेषता है। भारतीय एकता अक्षुण्य है क्योंकि भारतीय संस्कृति की धारा निरन्तर बहती रही है और बहेगी।

—मदनमोहन मालवीय

विविधता में एकता भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है।

—अटलबिहारी वाजपेयी

सच्चरित्र

चरित्र बुद्धि की अपेक्षा अधिक उच्च है।

—एमर्सन

चरित्र केवल एक स्थायी स्वभाव है।

—प्लूटार्क

विनीत, दयालु और सच्चरित्र होना धर्म का परम तत्व है।

—विलियमपेन

विश्व में सच्चरित्र मानव ही प्रगति कर सकता है।

—चेस्टर फील्ड

चरित्र को उज्ज्वल और पवित्र रखना चाहिए।

—चेस्टर फील्ड

मन के सौन्दर्य और चरित्रबल की समानता करने वाली कोई दूसरी वस्तु नहीं।

—जे० एलन

कर्मशील बनो और उच्च चरित्रवान् मानव बनो।

—नेपोलियन

अपने चरित्र को दर्पण के समान सहेजकर रखो जिससे दूसरों को भी उसमें अपना प्रतिबिंब देखने की आकांक्षा हो।

—अज्ञात

चरित्र जब एक बार गिर जाता है तब मिट्टी के बर्तन की तरह चकनाचूर हो जाता है।

—अज्ञात

चरित्र का सुधारना ही मानव का परम लक्ष्य होना चाहिए।

—टी० ग्रीन

जब धन गया, कुछ भी नहीं गया; जब स्वास्थ्य गया, कुछ गया, जब चरित्र गया सब कुछ गया।

—अज्ञात

मानव की सब से बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं, अपितु चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक है।

—हर्बर्ट स्पेन्सर

सच्चरित्रता ही वह सर्वोत्तम संपत्ति है जो कोई भी व्यक्ति आने वाली संतानों के लाभ के लिए दे सकता है।

—स्वामी विवेकानन्द

महान् चरित्र का निर्माण महान् और उज्जवल विचारों से होता है।

—स्वामी शिवानन्द

चरित्र जब तक उज्जवल रहता है तब तक उसे सहेज कर चलने की इच्छा रहती है। जब दुर्भाग्यवश उसमें एक भी छींटा लग जाता है तो हम गंदे वस्त्र की भांति उसकी चिंता नहीं करते।

—अज्ञात

सतीत्व

एकनिष्ठ प्रेम और सतीत्व ठीक एक ही वस्तु नहीं है।

—शरच्चन्द्र (निबन्धावली)

परिपूर्ण मनुष्यत्व सतीत्व की अपेक्षा बड़ा है।

—शरच्चन्द (साहित्य में आदर्श और दुर्गति)

सतीत्व वह सम्पत्ति है, जो प्रेम की सफलता से उत्पन्न होती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सतीत्व तो केवल देह में ही सीमित नहीं है, वह मन से भी तो होना चाहिए। मन, वचन, काय से प्रेम विना हुए तो उसका ऊँचे स्तर पर पहुँचना सम्भव नहीं।

—शरच्चन्द (अधिकार)

सतीत्व वह सम्पत्ति है, जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सतीत्व घर की चहारदीवारी में नहीं उपजता, यह ऊपर से लादा नहीं जा सकता। परदे की दीवारें इसकी रक्षा नहीं कर सकतीं। यह अन्तः-करण से उत्पन्न होता है और इसका मूल्य तभी कुछ है, जब इसमें सभी प्रलोभनों पर विजय पाने की क्षमता होती है।

—महात्मा गांधी

रामायण, महाभारत और पुराणों आदि में बारम्बार इस बात की आलोचना की गई है कि यह सतीत्व नारी का कितना बड़ा धर्म है। यहाँ तो स्वयं भगवान् तक इस सतीत्व की चपेट में आकर अनेक बार अस्थिर हो चुके हैं।

—शरच्चन्द्र (नारी का मूल्य)

अंग्रेज भी कहते हैं कि आचरण की पवित्रता होनी चाहिए पर वे इसके द्वारा पुरुष और स्त्री दोनों का ही निर्देश करते हैं। और हमारे देश में जिस शब्द का अर्थ 'सतीत्व' होता है, वह सिर्फ स्त्रियों के लिए है। यह सत्य है कि शास्त्रकार लोग वनों में रहते थे, किन्तु फिर भी वे लोग समाज को पहचानते थे और इसीलिए वे लोग एक शब्द बनाकर भी अपने जाति-भाइयों अर्थात् पुरुषों को संकट अथवा परेशानी में नहीं डाल गए।

—शरच्चन्द्र (नारी का मूल्य)

राजभक्त को राजा, जौहरी को उत्तम हीरा, प्यासे को शीतल जल और रोगी को संजीवनी रस जैसे प्यारे और सम्मान के पदार्थ होते हैं, स्त्रियों के लिए सतीत्व उससे कहीं अधिक प्यारी और आदर की वस्तु है।

—अज्ञात

सतीत्व को मैं भी तुच्छ नहीं कहता, किन्तु इसी को स्त्री-जीवन का चरम और परम श्रेय जानने को भी मैं कुसंस्कार समझता हूँ। कारण, मनुष्य का, मनुष्य होने का जो स्वाभाविक और सच्चा दावा है, उसे चकमा देकर जिस किसी ने जिस किसी वस्तु को बड़ा करके खड़ा करने की चेष्टा की है, उसने उसे भी धोखा दिया है, और आप भी ठगा गया है।

—शरच्चन्द्र (निबन्धावली)

जैसे स्वर्ण का खरा-खोटापन अग्नि की ज्वलन्त शिखा में प्रकट होता है, स्त्री का सतीत्व भी वैधव्य की कठोर यातना में पूर्ण रूप से प्रमाणित होता है।

—अज्ञात

जैसे बिना जल के मीन और बिना आहार के पुरुष नहीं रह सकता, वैसे ही बिना सतीत्व और पतिव्रत धर्म का अंकुर हृदय भूमि में नहीं जम सकता।

—अज्ञात

सच्चिदानन्द

सत्य के साथ ज्ञान, शुद्ध ज्ञान अवश्यम्भावी है। जहाँ सत्य नहीं है, वहाँ शुद्ध ज्ञान की सम्भावना नहीं है। इसीसे ईश्वर के नाम के साथ चित् अर्थात् ज्ञान शब्द की योजना हुई है और जहाँ सत्य ज्ञान है—वहाँ आनन्द ही होगा, शोक होगा ही नहीं। सत्य के शाश्वत होने के कारण आनन्द भी शाश्वत होता है। इसी कारण ईश्वर को हम सच्चिदानन्द के नाम से भी पहचानते हैं।

—महात्मा गांधी

सज्जन-सज्जनता

दियासलाई ! धन्य तू जरि जग देति उजास।
तो सम केते नर इतै, पर उपकार विलास ॥
—किशोरीलाल वाजपेयी (तरंगिणी)

साधु चरित सुभ सरिस कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । वंदनीय जेहि जग जस पावा ॥
वंदऊं संत समान चित, हित अनहित नहिं कोइ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि,सम सुगंध कर दोइ।
—तुलसीदास (रामचरित मानस)

काटा हमने और खूब पीटा मर-मर कर।
पेर पेर कर तेल निकाला तुझ से जी-भर ॥
फिर दीपक में भर कर थोड़ा तूल मिलाया।
निर्दयता से खोद-खोदकर तुम्हें जलाया ॥
हमने तो अस्तित्व तक, नष्ट तुम्हारा कर दिया।
तुमने अहा प्रकाश से,अखिल भुवन कोभर दिया ॥
—मोहनलाल महतो वियोगी (सरसों का सौजन्य)

विन पूछे ही कहत है, सज्जन हित के बैन।
भले बुरे कौं कहत हैं, ज्यों तमचर गत रैन ॥
—वृन्द (सतसई सप्तक)

धनी की नहीं खोज में घूमते, न लिखवाड़ के पैर को चूमते।
न विद्वान् मक्कार ही चाहिए, कहीं से खरा आदमी लाइये ॥
—सत्यदेव परिव्राजक (अनुभव)

जानो सज्जन की यही, एकमात्र पहचान।
इनके होते तीन हैं—मन, वच, कर्म समान ॥
—रुद्रदत्त मिश्र

कीचड़ से कांचन को लेना, यह तो सज्जनों की रीति है।

—विनोबा भावे

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥

—रहीम

जग सूरज चन्द टरै तो टरै पै न सज्जन नेहु कमौं विचलै।
धन सम्पति सर्वस गेह नसौ नहिं प्रेम की मेड़ सों एड़ टलै॥
सतवादिन को तिनका सम प्रान रहै तो रहै वा ढलै तो ढलै।
नित मीत की प्रीत प्रतीत रही इक और सबै जग जाउ भलै॥

—भारतेंदु हरिश्चंद्र (नाटकावली)

यदपि मलय तरु को न विधि, फल अरु फूलन दीन्ह।
तदपि अहो ! निज तन करत, औरन ताप-विहीन॥

—कहैन्यालाल पोद्दार

जहँ सजन तहँ प्रीति है, प्रीति तहाँ सुख ठौर।
जहँ पुष्प तहँ वास है, जंह वास तहँ भौर॥

—वृन्द (सतसई सप्तक)

सत्य और न्याय का समर्थन मनुष्य कीसज्जनता और सभ्यता का एक अंग है।

—प्रेमचन्द

सज्जग मुख मीठे बचन, सहज न कहत वनाय।
लैवो कौन सुगन्ध कौ, भंवरन देत सिखाय॥

—कुलपति मिश्र (रस रहस्य)

संसार में सज्जन पुरुप ही स्वतंत्र होते हैं, नीच पुरुप सेवक होते हैं।

—प्लूटार्क

केषां त स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्यूत्तमेपु।
(सज्जनों से की हुई प्रार्थना किन की सफल नहीं होती।)

—कालिदास

सर्वत्र च दयावन्तः सन्तः करुणवेदिनः ।

(सज्जनों का यह लक्षण है कि वे सदैव दया करने वाले और करुणा-शील होते हैं ।)

—महाभारत

आदानं हि विसर्गाय सतां वारि मुचामिव ।

(मेघों के समान सज्जन पुरुष भी दान करने के लिए ही किसी वस्तु को ग्रहण करते हैं ।)

—कालिदास

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।

(सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी, नीच से सफल याचना भी अच्छी नहीं ।)

—कालिदास

प्रसादसौम्यानि सतां सुहृज्जने पतंति चक्षूंपि न दारुणाः शराः ।

(सज्जन अपने मित्रों पर कृपा की दृष्टि डालते हैं, शरों की वर्षा नहीं करते ।)

—कालिदास

निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः ।
प्रत्युक्तं हि प्रर्णायषु सतामीप्सितार्थं क्रियैव ।।

(हे बादल ! बिना गरजे हुए भी तुम चातक को वर्षा जल से तृप्त करते हो; क्योंकि प्रार्थना करनेवालों के मनोरथ को पुरा कर देना ही सज्जनों का उत्तर होता है ।)

—कालिदास

दर्शन ध्यानसंस्पर्शेमत्सी कूर्मी च पक्षिणी ।
शिशुं पालयते नित्यं तथा सज्जनः संगतिः ।।

(मछली, कछुई और पक्षी ये दर्शन, ध्यान और स्पर्श से जैसे बच्चों (अण्डों) को हमेशा पालते हैं वैसे ही सज्जनों की संगति है ।)

—चाणक्य

दातारः संविभक्तारो दीनानुग्रह कारिणः।
सर्वभूत दयावन्तस्ते शिष्टाः शिष्टसम्मताः॥

(सज्जनों की सम्मति में वे ही लोग सभ्यपुरुष माने जाते हैं,जो दानी, अपने आश्रितों के भाग को न्यायपूर्वक अर्पण करने वाले, दीन जनों पर अनुग्रह करने वाले और सब प्राणियों के प्रति दयालु होते हैं।)

—वेदव्यास

सन्तोऽसत्सु न रमन्ते, हंस प्रेतवने न रमते।
(सज्जन दुर्जनों के साथ नहीं रहते, हंस श्मशान में नहीं रहता।)

—चाणक्य

त्यजन्ति शूर्पवद्दोषान् गुणान् गृहणन्ति साधवः।
दोषग्राही गुण त्यागी, चालनीवद्धि दुर्जनः॥

(सज्जनों का स्वभाव सूप के समान होता है जो दोष रूप कंकड़ आदि को दूर कर देता है और गुण रूप धान्य को अपने पास रख लेता है। दुर्जनों का स्वभाव चलनी के समान होता है जो दोष रूप चोकर आदि अपने पास रख लेती है और गुण रूप आटे को अलग कर देती है।)

—अज्ञात

व्यवहारों की शुद्धता और दूसरों के प्रति आदर यही सज्जन मनुष्य के दो मुख्य लक्षण हैं।

—डिजरायली

सज्जन दूसरों का उपकार बहुत विनम्रता से करता है और ऐसा लगता है कि वह उपकार पा रहा है जबकि वह कर रहा है।

—सी० न्यूमैन

भला काम करने का स्वभाव ऐसा साधन है जिसे शत्रु छीन नहीं सकता और चोर चुरा भी नहीं सकता।

—मा० ओरिलियस

शांति और हर्ष सज्जन पुरुष के लक्षण हैं।

—एमर्सन

सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी पुरुष को पीड़ित नहीं करता।

—न्यूमैन

राजकीय ठाठ-बाट की अपेक्षा सुजनता की निर्धनता अधिक मिठास है।

—रस्किन

सज्जनता उत्कृष्ट मानवता के लिए दूसरा शब्द है।

—टास्कॅन

सत्य

अश्लीलता के कीटाणु सत्य की धूप से ही मरेंगे, आँखों से उन्हें लुकाने छुपाने की नीति से वे अन्धेरा पाकर और भी बढ़ सकते हैं! बुराई अंधेरे में फैलती है। हवा और धूप लगने से वह छू होती दीखती है।

—जैनेन्द्र (साहित्य का श्रेय और प्रेय)

सत्य किसी से बहिर्गत नहीं है, न सत्य से कुछ बहिर्गत है। भेद इतना ही है कि जितना और जो देखने जानने में आता है सत्य उतने में समाप्त नहीं है। पर सत्य से वह अन्यथा भी नहीं है।

—जैनेन्द्र (कल्याणी)

झूठ बात चिकनी होती है और मन उसे सरलता से बाहर फेंक देता है। सच बात को खींचकर निकालना होता है क्योंकि वह जी के भीतर बहुत गहरी गई होती है।

—जैनेन्द्र (जै० क० भाग ४)

जो सत्य है, उसी को सब समय, सब अवस्थाओं में ग्रहण करने की चेष्टा करनी चाहिए। इससे चाहे वेद ही मिथ्या हो जाएँ। वे सत्य से बढ़ कर नहीं हैं; सत्य की तुलना में उनका कोई मूल्य नहीं।

—शरच्चन्द्र (चरित्रहीन)

सत्य स्थिरता से घर नहीं है, न अनुशासन से परिबद्ध। काल भी सत्य ही है। काल, जो बनने और मिटने का आधेय है अतः स्थिरता सिद्धि नहीं है। गति भी आवश्यक है। जीवन अस्तित्व से अधिक कर्म है। उन्नति, प्रगति, परिवर्तन आदि इसी जीवन की परिपूर्णता के अंग है।

—जैनेन्द्र (जै० क० भाग १)

सत्य जब सचमुच ही मानव के हृदय से निकलकर सम्मुख आ उपस्थित हो जाता है, तब प्रतीत होता है कि वह सजीव है, मानो उसके रक्त माँस युक्त शरीर है, और मानो उसके भीतर प्राण भी है, 'नहीं' कहकर अस्वीकार करने पर मानो वह चोट करके कहेगा, 'चुप रहो, मिथ्या तर्क करके अन्याय की सृष्टि मत करो।'

—शरच्चन्द्र (श्रीकान्त, पर्व-२)

सत्य पालन करने में दुख है। उसे कष्ट और आघातों में से तो किसी न किसी दिन पाया भी जा सकता है, पर वंचना अथवा प्रतारण की मधुर राह से वह कभी नहीं चलता-फिरता।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

मिथ्या की तरह सत्य को भी मानव जाति दिन-रात बनाया करती है। शाश्वत सनातन नहीं है यह, जन्म और मृत्यु दोनों हैं इसके। मैं भूठ नहीं कहता—मैं प्रयोजन से सत्य की सृष्टि करता हूँ।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

सत्य हजार ढंग से कहा जा सकता है, और फिर भी हर ढंग सच हो सकता है। —स्वामी विवेकानंद

सत्य के लिए सब-कुछ त्यागा जा सकता है, पर सत्य को किसी भी चीज़ के लिए छोड़ा नहीं जा सकता, उसकी बलि नहीं दी जा सकती।

—स्वामी विवेकानंद

सत्य का उन्वेषण शक्ति की अभिव्यक्ति है—वह कमजोर, अंध लोगों का अन्धेरे में टटोलना नहीं है।

—स्वामी विवेकानंद

सच्ची बात विश्वासोत्पादक होती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सत्य के मित्र कम होते हैं। —प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सच्चाई आप ही अपना इनाम है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सत्य से आत्मा भी बलवान हो जाती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सच्चे आदमी को हम धोखा नहीं दे सकते। उसकी सच्चाई हमारे हृदय में उच्च भावों को जागृत कर देती है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

नन्हे-नन्हे हाथों से समुद्र के प्रवाह को रोकने वाले साहस का एक ही स्रोत हो सकता है और वह सत्य पर अटल विश्वास।

—प्रेमचन्द (दिल की रानी)

जो सच्चा है, वह चमार भी हो तो आदर के योग्य है, जो दगाबाज, झूठा लम्पट हो, वह ब्राह्मण भी हो तो आदर के योग्य नहीं।

—प्रेमचन्द (कर्मभूमि)

पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि।

(हे मानव ! एक मात्र सत्य को ही भली भांति जान ले, परख ले।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

सच्चस्स आणाए उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ।

(जो मेधावी साधक सत्य की आज्ञा में उपस्थित रहता है, वह मृत्यु के प्रवाह को तैर जाता है।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

सहि ओ दुक्खमत्ताए पुट्ठो नो झंझाए।

(सत्य की साधना करने वाला साधक सब ओर दुखों से घिरा रहकर भी घबराता नहीं है, विचलित नहीं होता है।)

—महावीर स्वामी (आचारांग)

सच्चंभि धिइं कुव्वह।
(सत्य में धृति कर, सत्य में स्थिर हो।)
—महावीर स्वामी (आचारांग)

सच्चेसु वा अणवज्जंवयति।
(सत्य वचनों में भी हिंसा रहित सत्व वचन श्रेष्ठ है।)
—महावीर स्वामी (सूत्रकृतांग)

से दिट्ठिमं दिट्ठि नलूसएज्जा।
(सम्यग्दृष्टि साधक को सत्य दृष्टि का अपलाप नहीं करना चाहिए।)
—महावीर स्वामी (सूत्रकृतांग)

सच्चं···पभासकं भवति सव्वभावाणं।
(सत्य···समस्त भावों-विषयों का प्रकाश करने वाला है।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

सच्चं···लोगम्मि सारभूयं।
···गंभीररतं महासमुद्दाओ।
(विश्व में सत्य ही सारभूत है। सत्य महासागर से भी ज्यादा गंभीर है।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

सच्चं···सोमतरं चंदमंडलाओ,
दित्ततरं सूरमंडलाओ।
(सत्य, चंद्रमंडल से भी अधिक सौम्य है। सूर्य मंडल से भी अधिक तेजस्वी है।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो।
(वह सत्य भी नहीं बोलना चाहिए, जिससे किसी तरह का अनिष्ट होता है।)
—महावीर स्वामी (दशवैकालिक)

त सच्चं भगवं।
(सत्य ही भगवान है।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

सच्चं च हियं च मियं च गाहणं च।
(ऐसा सत्य वचन बोलना चाहिए जो हित, मित और ग्राह्य हो।)
—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

अप्पणा सच्चमेसेज्जा।
(अपनी स्वयं की आत्मा के द्वारा सत्य का अनुसंधान करो।)
—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

भासियव्वं हियं सच्चं।
(सदाहितकारी सत्य वचन बोलना चाहिए।)
—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

सच्चं ह्वे सादुतरं रसानं।
(सब रसों में सत्य का रस ही श्रेष्ठ है।)
—महात्मा बुद्ध (सुत्तनिपात)

एकं हि सच्चं न दुतियमत्थि।
(सत्य एक ही है, दूसरा नहीं।)
—महात्माबुद्ध (सुत्तनिपात)

न हेव सच्चानि बहूनि नाना।
(न सत्य अनेक है, न नाना हैं।)
—महात्मा बुद्ध (महानिद्देसपालि)

सत्य पर विश्वास रखना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है, उसे मृतक समझना चाहिए।
—प्रेमचन्द (बैंक का दीवाला)

सत्य मिथ्या के साथ कभी मैत्री नहीं कर सकता। चाहे सारी दुनिया मेरे विरुद्ध हो जाए, अन्त में सत्य ही जीतेगा।
—स्वामी विवेकानंद

सत्य की एक चिंगारी असत्य के पहाड़ को भस्म कर सकती है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

सत्य चाहे सिर कटा दे, लेकिन कदम पीछे कहीं हटाता।

—प्रेमचन्द (सच्चाई का उपहार)

सुगा ऋतस्य पन्थाः।
(सत्य का मार्ग सुगम है।)

—ऋग्वेद

का सुब्राह्मण का डोम भर, का जैनी क्रिस्तान।
सत्य बात पर जो रहै, सोई जगत महान।।

—सुधाकर द्विवेदी

सत्य समान पूत जग नाहीं, सत सों रहै नाऊँ जग माहीं।
कोन्हि पूत एक देस बखाना, सत्य पूत चारों खंड जाना।।

—उसमान (चित्रावली)

कौन सत्य को खा सकता है?
धैर्य शर्त, भय-भ्रांति व्यर्थ है।
विश्वासी के पग न डिगें बस—
जहाँ सत्य, संशय अनर्थ है।

—नरेन्द्र शर्मा (पलाश वन)

होई मुख रात सत्य के बाता। जहाँ सत्य तहँ धरम सँघाता।।
बाँधी सिहिटि अहै सत केरी। लछिमी अहै सत्य के चेरी।।
सत्य जहाँ साहस सिधी पावा। जौ सतवादी पुरुष कहावा।।
सो सत छाँड़ि जो धरम बिनासा। भौमतिहीन धरम करि नासा।।

—मलिक मुहम्मद जायसी (जायसी ग्रंथावली)

क्रीलन्त्यस्य सूनृता आपो न प्रवता यतीः।
(प्रवाह में बहते हुए जल के समान प्रिय तथा सत्य वाचा क्रीड़ा करती हुई बहती है।)

—ऋग्वेद

सुवरन होत-खरा लहै आँच को संग।
सुजनन पै त्यों साँच तै चढ़त चौगुनी रंग।।

—दुलारेलाल भार्गव (दुलारे दोहावली)

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।
(सत्य एक ही है, विद्वान उसका अनेक प्रकार से वर्णन करते हैं।)

—ऋग्वेद

तलवार का मुँह ताकने वाला सत्य ही मिथ्या है।

—प्रेमचन्द (विश्वास)

सत्येनोत्तभिता भूमिः।
(सत्य से ही धरा अधर में स्थिर है अर्थात सत्य से ही धरा धान्य एवं शस्यादि से फलती है।)

—ऋग्वेद

इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।
(मैं असत्य से हटकर सत्य का आश्रय लेता हूँ।)

—यजुर्वेद

दृष्टवा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

(प्रजापति ने सत्यासत्य को देखकर उन्हें विचार पूर्वक पृथक्-पृथक स्थापित किया! असत्य में अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा को स्थापित किया।)

—यजुर्वे

ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं।
(सत्य (भाषी) की जिह्वा से अतिमोहक मधु रस झरता है।)

—सामवे

सत्यं वै श्रीर्ज्योतिः।
(सत्य ही श्री है, सत्य ही प्रकाश है।)

—शतपथ ब्राह

मृत्युर्वा असत्, सदमृतम् ।
(असत्य मृत्यु है और सत्य अमृत है ।)

—शतपथ ब्राह्मण

चक्षुर्वै सत्यं ।
(नेत्र ही सत्य है, अर्थात् सुनी सुनाई बातों की अपेक्षा स्वयं साक्षात्कृत अनुभव ही सत्य होता है ।)

—तैत्तिरीय ब्राह्मण

अमृतात् सत्यमुपैमि, मानुषाद् दैव्यमुपैमि ।
(मैं असत्य से सत्य को प्राप्त करता हूँ; मैं मानव से देवत्व को प्राप्त करता हूँ ।)

—तैत्तरीय ब्राह्मण

वृजिनमनृतं दुश्चरितं । ऋजु कर्म सत्यं सुचरितं ।
(असत्य कुटिलता से किया जाने वाला दुश्चरित्र पाप है और सत्य सरलता से किया जाने वाला सच्चरित्र पुण्य है ।)

—तैत्तरीय ब्राह्मण

सत्यं ब्रह्मणि, ब्रह्म तपसि ।
(सत्य ब्रह्म में प्रतिष्ठित है और ब्रह्म तप में ।)

—गोपथ ब्राह्मण

सत्यं हि इन्द्रः ।
(सत्य ही इन्द्र है ।)

—शाङ्ख्यायन आरण्यक

हृदा पश्यन्ति मनसा मनीषिणः ।
(हृदय कमल में एकाग्र हुए मन के द्वारा ही ज्ञानी सत्य का साक्षात्कार करते हैं ।)

—तैत्तिरीय आरण्यक

सत्य कभी वृद्ध नहीं होता ।

—कहावत

सरल सत्य विश्व की सर्वोत्कृष्ट वस्तुओं में से एक है।

—बुल्वर

सत्य प्रभु की आत्मा है और प्रकाश उसकी देह है।

—पाइथैगोरस

सत्य का सर्वोत्कृष्ट अलंकार नग्नता है।

—कहावत

यह अनोखी बात है, किन्तु सत्य है कि सत्य हमेशा अनोखा होता है, कथा से भी अधिक अनोखा।

—बायरन

जिस तरह सूर्य की किरणें किसी पदार्थ से अपवित्र नहीं की जा सकतीं उसी तरह सत्य को भी बाह्य स्पर्श से अपवित्र करना असम्भव है।

—मिल्टन

जो सत्य की खोज में रहता है उसे किसी एक देश का नहीं होना चाहिए।

—वाल्टेयर

सत्य का हरेक उल्लंघन मनुष्य समाज के स्वास्थ्य में छुरी भोंकने के समान है।

—एमर्सन

जबतक जीवित रहो सत्य बोलो और शैतान को लज्जित करो।

—शेक्सपियर

सत्य वस्तुतः अन्त तक सत्य ही बना रहता है।

सत्य का सबसे बड़ा मित्र समय है, इसका सबसे बड़ा शत्रु पक्षपात और इसका अचल साथी नम्रता है।

—कोल्टन

सत्य के तीन भाग हैं, प्रथम, जिज्ञासा जो कि उसकी आराधना है, द्वितीय ज्ञान जो कि उसकी उपस्थिति है और तृतीय विश्वास जो कि उसका उपभोग है।

—बेकन

सत्य अमर है, त्रुटि नश्वर।

—मेरी बेकर एडी

सत्य किरणों की किरण, सूर्यों का सूर्य, चन्द्रमाओं का चन्द्रमा तथा नक्षत्रों का नक्षत्र है—सत्य सव का सारभूत तत्त्व है।

—डिकेन्स

यदुवक्थानृतं जिह्वया वृजिनं वहु।
(जिह्वा से असत्य वचन वोलना ब्रहुत बड़ा पाप है।)

—अथर्ववेद

सत्यमेव देवाः।
(देव मूर्तिमान सत्य है।)

—शतपथ ब्राह्मण

विपक्ष में हो सम-भाव पक्ष में
तथा मृषा-भाषण में न प्रीति हो,
न सत्य-सा है तप और विश्व में
कहा गया, ऋत ब्रह्म रूप है।

—अनूप (वर्द्धमान)

सत्य आखिर सत्य ही है, हो भले सपना सुनहला।

—पद्मसिंह शर्मा कमलेश

साँच कहूँ ते मारि है, झूठे जग पतियाय।
ये जग काली कूकरी, जो छेड़े ता खाय॥

—कबीर

नहीं सत्य का अंत कहीं हैं, मानव है केवल बालक सा,
प्रगति निरन्तर है उसका पथ, जिस पर जायेगा वह बढ़ता।

—रांगेय राघव (मेधावी)

सत्यमेव जयते नानृतम्।
(सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं।)

—मुंडकोपनिषद्

प्रभु सत्य है और प्रकाश उसकी छाया।

—प्लेटो

समय मूल्यवान् है, परन्तु 'सत्य' समय की अपेक्षा अधिक मूल्यवान् है।

—डिजरायली

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यह कि हम उसे आचरण में लायें।

—एमर्सन

सत्य को कह देना ही मेरे परिहास का ढंग है। विश्व में सबसे विचित्र परिहास है।

—जार्ज बर्नार्डशा

सत्य सहस्रों अश्वमेघों से भी श्रेष्ठ है।

—महाभारत

सत्य से बढ़कर धर्म नहीं है। सत्य स्वयं परब्रह्म परमात्मा है।

—महाभारत

सत्यमेव ब्रह्म।
(सत्य ही ब्रह्म है।)

—शतपथ ब्राह्मण

सौन्दर्य ही सत्य है, सत्य ही सौन्दर्य।

—कीट्स

सत्य एक जलते हुए दीप की भाँति है जो अन्धकार में छिपाया नहीं जा सकता, क्योंकि वह अपना प्रकाश स्वयं ले चलता है।

—एडवर्ड विल्सन

सत्येनार्कः प्रतपति सत्ये तिष्ठति मेदिनी।
सत्यं चोक्तं परोधर्मः स्वर्ग सत्ये प्रतिष्ठितः॥

(सत्य से ही सूर्य तप रहा है। सत्य पर ही धरा टिकी हुई है। सत्य भाषण सबसे बड़ा धर्म है। सत्य पर ही स्वर्ग प्रतिष्ठित है।)

—विश्वामित्र

जिसके हृदय में सत्य है, उसे डरने की आवश्यकता नहीं। भले ही उसकी वाणी में लुभाने का अभाव हो।

—रस्किन

नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति सत्य समं पतः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्॥

(विद्या के समान कोई चखु नहीं है, सत्य के समान कोई तप नहीं है। राग के समान कोई दुःख नहीं है और न त्याग के समान सुख।)

—महाभारत

सत्य की उपेक्षा कर, मनुष्य स्वयं ही हिन्दू, ब्रह्म, मुसलमान आदि बढ़े हुए नामों का समाज बनाकर अपने लिए एक भूल भुलैया तैयार कर लेता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

हम सत्य तो उसे ही कहते हैं जिसे देख सकें और कर सकें।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (तीन मंजिल)

अवस्था चक्र में बाहर जो कुछ बन जाता है, संसार की दृष्टि में वही सत्य प्रतीत होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आँख की किरकिरी)

रूप की सीमा ही जब प्रदीप के समान असीम का दीप जलाकर लाती है तभी सत्य प्रकट होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सृष्टि)

सत्य कोई ऐसी सुलभ वस्तु नहीं है, जिसे मूल्य चुकाए बिना सुगमता से हर व्यक्ति प्राप्त कर सके।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

सत्य को स्वीकार करने में कायरता, दुविधा और संशय हमारे मन को ऐसे घेर लेते हैं कि उस व्यूह से बाहर निकलना हमारे बूते के बाहर हो जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (महात्मा का पुण्यव्रत)

विश्व में कुछ ऐसे स्थायी सत्य हैं जो सभी राष्ट्रों के जीवन के लिए मूल पूंजी हैं और वह सदैव से चली, आई पैत्तिक सम्पत्ति है, जिसे बहुत से राष्ट्र या तो बालिग होकर उड़ा देते हैं अथवा अपने किसी काम में न लाकर धरा में गाड़कर उसें भूतों के हवाले कर जाते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (राष्ट्र की पहली पूंजी)

सत्य चिर-नवीन होता है, उसका रस अक्षय है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सत्य का दर्शन)

यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बन्द कर दोगे, तो सत्य भी बाहर रह जायगा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सत्य का स्रोत भूलों से होकर वहता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

घटना रूपी-वस्त्र, सत्य के लिए, आवश्यकता से अधिक चुस्त जान पड़ता है। गल्प में वह सुखपूर्वक विचर सकता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सत्य ही सर्वोत्तम नीति है।

—महात्मा गांधी

सत्य अनन्त रूप में असत्य की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है।

—विवेकानन्द

सत्य एक है, उसकी उपासना करने वाले उसे अलग-अलग नामों में पुकारते हैं।

—विनोबा भावे

परमेश्वर सत्य है; यह कहने के बजाय 'सत्य ही परमेश्वर है' यह कहना अधिक उपयुक्त है।

—महात्मा गांधी

धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।।

—तुलसीदास

सत्य मूल सब सुकृत सुहाई। वेद पुराण मुनि भाई।।

—तुलसीदास (मानव अयोध्या०)

सत्य की कभी हार नहीं होती।

—प्रेमचन्द

सत्य भी अमूर्त है, इसलिए सब लोग अपने को ठीक लगे, ऐसे सत्य की मूर्ति की कल्पना कर लें।

—महात्मा गांधी

विलास के प्रेमी सत्य का पालन नहीं करते।

—प्रेमचन्द

जो सत्य जानता है, मन से, वचन से और काया से सत्य का आचरण करता है, वह परमेश्वर को पहचानता है। इससे वह त्रिकाल दर्शी हो जाता है। उसे इसी देह में मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

—महात्मा गांधी

सत्य के ऊपर और कोई ईश्वर नहीं है, सत्य ही सर्व प्रथम खोजने की वस्तु है।

—महात्मा गांधी

मैं सत्य के आदर्श को अहिंसा के सिद्धान्त से अधिक समझता हूँ। सत्य बिना अहिंसा का प्रयोग निष्फल है।

—महात्मा गांधी

यदि हमें सच्चाई का अनुभव करना है तो हमारे साधन श्रेष्ठ होने चाहिएँ। इस बात को हमें अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि हमें सत्य का अनुभव करने के लिए यदि हम जल्दबाजी में पशुबल अथवा बुरे तरीकों का उपयोग करते हैं तो हमें निराश होना होगा।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

सत्य का ज्ञान धार्मिक विश्वास का परिणाम नहीं होता वरन गम्भीर नैतिक आचरण का अनुभव होता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

सत्य को नकारना वैसी ही मूर्खता होगी जैसे घर बढ़ने के डर से बच्चों की हत्या करना।

—विनायक दामोदर सावरकर

पलक से ओझल करने से क्या सच्चाई को ओट में डाला जा सकता है।

—जैनेन्द्रकुमार (सोच विचार)

साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है ताके हिरदे आप॥

—कबीर

सृष्टि में एकमात्र सत्य की सत्ता है।

—महात्मा गांधी

असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सत्य या ज्ञान पर किसी का मालिकाना अधिकार नहीं है। दुनिया का सम्पूर्ण धर्म, जगत का सम्पूर्ण सत्य तुम्हारा है।

—स्वामी रामतीर्थ

साँचे साप न लागई, साँचे काल न खाय।
साँचे को साँचा मिलै, साँचे माहि समाय॥

—कबीर

सत्य महान् धर्म है। इतर धर्म क्षुद्र हैं और उसी के अंग हैं। वह तप से भी उच्च है, क्योंकि वह दंभ-विहीन है। शुद्ध बुद्धि की आकाशवाणी उसी का अनाहत गान करती है। वह अन्तरात्मा की सत्ता है। उसको दृढ़ कर लेने पर ही अन्य सब धर्म आचरित होते हैं।

—जयशंकर प्रसाद

सत्य हमारे जीवन का नियम है।

—महात्मा गांधी

जो दूसरों का सहारा ढूँढ़ता है वह सत्ता स्वरूप भगवान् की सेवा नहीं कर सकता।

—स्वामी विवेकानन्द

सत्य गोपनीयता से घृणा करता है।

—महात्मा गांधी

साँच बिना सुमिरन नहीं, भय बिन भक्ति न होय।
पारस में परदा रहै, कंचन केहि विधि होय॥

—कबीर

जहाँ सत्य का बंधन नहीं है, वहाँ रास को ढीला करना अच्छा नहीं होता।

—शरच्चन्द्र (श्रीकान्त, पर्व २)

सत्य का स्थान हृदय में है, मुख में नहीं। केवल मुख से निकलने के कारण ही कोई बात सत्य नहीं बन जाती। तो भी उसे ही जो लोग सबसे आगे, सबसे ऊपर स्थापित करना चाहते हैं, वे सत्य से प्रेम करने के कारण ही ऐसा कहते हैं।

—शरच्चन्द्र (दत्ता)

सत्य को सत्य ही की तरह खुलासा कहना चाहिए।

—शरच्चन्द्र (चरित्रहीन)

कोई भी बात बहुत लोगों के बहुत बल देकर कहते रहने पर भी केवल कहने के बल से ही सत्य नहीं हो उठती।

—शरच्चन्द्र (हिन्दू मुस्लिम समस्या)

सत्यता से जिसका मन भरा हुआ है, वह विद्वान् न होने पर भी देश-सेवा बहुत कर सकता है।

—मोतीलाल नेहरू

यदि हमारे जीवन में सच्चाई है तो उसका प्रभाव अपने आप लोगों पर पड़ेगा।

—महात्मा गांधी

सत्य को यदि दबा भी दिया जाय, तो वह स्वतः प्रगट हो जायेगा।

—ब्रायण्ट

सत्य को नष्ट मत करो, क्योंकि यही जीवन का निर्माण-अवयव है।

—फ्रैंकलिन

सत्य को प्रकट कर सकना ही सत्य की ऊँची शिक्षा है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नौका डूबी)

सत्य के सर्वत्र दर्शन मात्र से ही सत्य की मूर्ति का प्रकाश होता है तथा वही मूर्ति हमें आनन्द प्रदान करती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दिन)

सत्य के साथ मानव का यथार्थ सम्वन्ध भक्तिमय होता है; वह स्वभाव को विनम्र वना देता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

सत्य अपने विरुद्ध एक आँधी पैदा कर देता है और यही आँधी उसके बीजों को दूर-दूर तक फैला देती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सत्यमार्ग

सत्य का, अहिंसा का मार्ग सीधा है, उतना ही संकरा भी है। तलवार की धार पर चलने के समान है। नट लोग जिस रस्सी पर एक निगाह रखकर चल सकते हैं, सत्य और अहिंसा की रस्सी उससे भी पतली है।

—महात्मा गांधी

सुगा ऋतस्य पन्थाः।
(सत्य का मार्ग सुख से गमन करने योग्य और सरल है।)

—ऋग्वेद

ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः ।
(सत्य की राह को दुष्कर्मी पार नहीं कर सकते ।)

—ऋग्वेद

सत्यवादी

सच्चा आदमी एक मुलाकात में ही जीवन को बदल सकता है, आत्मा को जगा सकता है और अज्ञान को मिटाकर प्रकाश की ज्योति फैला सकता है ।

—प्रेमचन्द

सत्यवादी मनुष्य पर कोई विपत्ति पड़ती है, तो लोग उसके साथ सहानुभूति करते हैं । दुष्टों की विपत्ति लोगों के लिए व्यंग्य की सामग्री बन जाती है । उस अवस्था में ईश्वर कोअन्यायी ठहराया जाता है···मगर दुष्टों की विपत्ति ईश्वर के न्याय को सिद्ध कर देती है ।

—प्रेमचन्द (ईश्वरीय न्याय)

जो असत्य भाषी हैं उन से अपने जन भी डरते हैं,
किन्तु सत्यवादी मानव का अरि भी आदर करते हैं ।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (नये सुभाषित)

सत्याग्रह

सत्याग्रह तो बल-प्रयोग के सर्वथा विपरीत होता है । हिंसा के सम्पूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गयी है ।

—महात्मा गांधी

सत्याग्रह ऐसी तलवार है जिसके सब ओर धार है । उसे काम में लाने वाला और जिस पर वह काम लायी जाती है, दोनों सुखी होते हैं । खून बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है । उस पर न तो कभी जंग लगता है और न कोई उसे चुरा ही सकता है ।

—महात्मा गांधी

सत्याग्रह स्वयं आर्त्त हृदय की एक मूक और अचूक प्रार्थना है।

—महात्मा गांधी

सत्याग्रह है कवच हमारा, कर देखे कोई भी वार।
हार मान कर शत्रु स्वयं ही, यहाँ करेंगे मित्राचार॥

—मैथिलीशरण गुप्त (स्वदेश संगीत)

सत्याग्रही

सत्याग्राही के लिए अविनयी होना तो दूध में जहर पड़ने के समान है। विनय सत्याग्रह का सबसे कठिन अंश है। विनय है विरोधी के प्रति भी मन में आदर रखना सरल भाव से उसके हित की रक्षा करना और उसी के अनुसार अपना वर्ताव रखना।

—महात्मा गांधी

गर्व और सत्याग्रही के वीच तो समुद्र लहराता है।सत्याग्रही का बल संख्या में नहीं, आत्मा में है। दूसरे शब्दों में ईश्वर में है।

—महात्मा गांधी

सत्कार

आवत ही हर्षे नहीं, नयनंन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन वरसे मेह॥

—तुलसीदास

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित्त लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥

—रहीम

सत्ता

सत्ता का सम्मान ही सर्वोच्च कर्त्तव्य है।

—पोप

सत्ता कभी लुप्त भले ही हो जाय, किन्तु उसका नाश नहीं होता। गृह का रूप न रहेगा तो ईंटें रहेंगी जिन के मिलने पर गृह बने थे। वह रूप भी परिवर्तित हुआ तो मिट्टी हुई, राख हुई, परमाणु हुए। उस चेतन के अस्तित्व की सत्ता नहीं मानी जाती; और न उसका चेतनामय स्वभाव उससे भिन्न होता है।

—जयशंकर प्रसाद

सत्ता धीरे-धीरे सभी मानवीय औरअच्छे गुणों का नाश कर देती है।

—बर्क

सत्पुरुष

पुष्प, चन्दन, अगर या चमेली किसी की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती। किन्तु सन्तों का यश वायु के विपरीत भी फैलता है। सत्पुरुष सभी दिशाओं को अपनी सुगन्ध से वासित कर देते हैं।

—भगवान बुद्ध

सत्पुरुषों की मनोवृत्ति सर्वदा धर्म की ओर ही रहती है। सत्पुरुष ही भूत और भविष्य के आधार हैं।

—महाभारत

सत्संग

हंसा कौवा न वर्णै, जाके दोय विचार।
हंसा मुकता हल चुगै, वे विष्टा भोजणहार॥

—रामचरण (अणभैवाणी)

निधानं सर्वरत्नानां, हेतु कल्याण संपदाम्।
सर्वस्या उन्नतेर्मूलं महतां संग उच्यते॥

(महान् व्यक्तियों का सत्संग उत्कृष्ट अमूल्य पदार्थों का आश्रय, कल्याण सम्पत्तियों का हेतु और सारी उन्नति का मूल कहा जाता है।)

—अज्ञात

जाहि बड़ाई चाहिए, तजै न उत्तम साथ।
ज्यों पलास, संग पान के, पहुँचे राजा हाथ।।

—अज्ञात

सत्संगति बुद्धि की जड़ता नष्ट करती है, वाणी को सत्य से सींचती है, मान बढ़ाती है, पाप मिटाती, चित्त को प्रसन्नता देती है, विश्व में यश फैलाती है। सत्संगति मानव के लिए क्या नहीं करती।

—भर्तृहरि

पूर्ण महात्मा एवं सज्जनों के साथ को ही सत्संग कहते हैं। सत्संग करे तो लोहे से सोना बन जाए।

—योगवाशिष्ठ

तुलयाम लवेनापि, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
भगवत्संगि संगस्य, मर्त्यानां किमुताशिषः।

(यदि प्रभु में आसक्त रहनेवाले मनुष्यों का पल भर भी संग प्राप्त हो तो उससे स्वर्ग और मोक्ष तक की तुलना भी नहीं कर सकते, फिर अन्य अभिलषित पदार्थों की तो बात ही क्या है ?)

—व्यासदेव

काचः कांचन संसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम्।
तथा सत्संनिधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्।।

(सुवर्ण के सम्बन्ध से काँच भी सुन्दर रत्न की शोभा को प्राप्त करता है, इसी तरह मूर्ख भी सज्जन के संसर्ग से चतुर हो जाता है।)

—हितोपदेश

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिल, जो सुख लव सतसंग।।

—तुलसीदास

कबिरा संगत साधु की ज्यों गंधी की बास।
जो कछु गंधी दे नहीं तौ भी बास सुबास।।

—कबीर

विनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा विनु सुलभ न सोई।।

—तुलसीदास

सत संगति दुर्लभ संसारा। न निमिष दंड भरि एकउ बारा।।

—तुलसीदास (मानस-उत्तर०)

सठ सुधरहिं सत संगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई।।

—तुलसीदास (मानस-बाल०)

कबिरा संगत साधु की हरै और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की आठों पहर उपाधि।।

—कबीर

कबिरा खाई कोट की, पानी पीवै न कोय।
जाय मिलै जब गंग से, सब गंगोदक होय।।

—कबीर

गंग पाप, शशि ताप हर, कल्प दरिद्रहिं चूर।
पाप ताप अरु दीनता, संत संग हो दूर।।

—गिरिधर कविराय (कुंडलियाँ)

सुबुद्धि, सत्कीर्ति विभूति, भावना
मिली कभी जो जिस भाँति से जिसे,
प्रभाव सत्संगति का अवश्य सो,
न सिद्धि पाते जन अन्य यत्न से।

—अनूप (वर्द्धमान)

सदाचार

सदाचार सम्पन्नता ही वड़ी कीर्ति है।

—हरिभाऊ उपाध्याय (प्रियदर्शी अशोक)

सदाचार जीवन के अभ्यास की अमूल्य वस्तु है।

—अज्ञात

आत्म-शुद्धि पर ही निर्भर है,
मनुज जाति का सदाचरण।
कर सकती है वही हृदय से,
दुर्भावों का निराकरण ॥

—ठाकुर गोपालशरण सिंह (जगदालोक)

न परः पापमादत्ते परेषां पाप-कर्मणाम्।
समयो रक्षितव्यस्तु सन्तश्चारित्र-भूषणः॥

(श्रेष्ठ पुरुष दूसरे पापाचारी प्राणियों के पाप को नहीं ग्रहण करता, उन्हें अपराधी मानकर उनसे प्रतिशोध लेना नहीं चाहता। इस उत्तम सदाचार की सदैव रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि सदाचार ही सत्पुरुषों का भूषण है।)

—वाल्मीकि

सद्गुण

अपने शत्रु में उत्तम बातों को खोजने और उसे अपनाने में ही सद्-गुण है।

—महात्मा गांधी

सद्गुण को समझो सदा खोया रत्न विशाल,
पाओ तुम उसको जहाँ अपनाओ तत्काल।

—मैथिलीशरण गुप्त (काबा और कर्बला)

यही दैवी नियम है कि केवल सद्गुण ही अचल है और यह तूफानों के द्वारा विचलित नहीं किया जा सकता।

—पाइथागोरस

सम्मान सद्गुण का पुरस्कार है।

—सिसरो

सद्‌गुण का पुरस्कार केवल सद्‌गुण ही है।

—एमर्सन

यद्यपि सद्‌गुण पल भर के लिए लज्जित किया जा सकता है, किन्तु उसे मिटाया नहीं जा सकता।

—प्यूब्लियस साइरस

सद्‌गुण में भी चार चाँद लग जाते हैं, जब वह किसी सुन्दर व्यक्ति में होती है।

—र्वाजल

सद्‌गुण धरा पर मानव को प्रसिद्धि प्रदान करता है, कब्र में प्रसिद्ध कर देता है, और स्वर्ग में अमर बना देता है।

—चिलो

सद्‌गुरु

'परसा' पाचर काल की, तूटी देही माँहि।
सत गुरु विना न नीसरे, सालै माहों माँहि॥

—परशुराम सागर

सद्‌भावना

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्‌दुःख भाग्भवेत्॥

(इस ब्रह्माण्ड में सबके प्रति सद्‌भावना रखनी चाहिए। यह विचार रखना चाहिए कि सभी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभी कल्याण की प्राप्ति करें और किसी को दुःख न हो।)

—अज्ञात

सन्मार्ग

सन्मार्ग पर चलते हुए यदि लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि कुमार्ग पर चलते हुए लोग तुम्हारी वड़ाई करें।

—सादी

जिस राह पर तुम्हारे पूर्वज चले हों, उस सत्पथ पर चलो। उस सन्मार्ग के यात्री का कभी पतन नहीं होता।

—मनुस्मृति

सफलता

जिन्होंने जीवन में कभी सफलता नहीं पाई है, उनके लिए सफलता का मूल्यांकन मधुरतम होता है।

—इमली डिकन्स

जीवन में सफलता पाना प्रतिभा और अवसर की अपेक्षा एकाग्रता और निरंतर प्रयास पर कहीं अधिक अवलम्बित है।

—सी० डब्ल्यू० वेन्डल

हर ठीक कदम पर सफलता चलती है।

—एमर्सन

सफलता का रहस्य ध्येय की दृढ़ता में है।

—डिजरायली

सफलता के लिए साहस सवसे वड़ी वस्तु है।

—ब्राउन

इस धरा पर केवल सफलता ही अच्छे बुरे का निर्णायक है।

—हिटलर

सफलता का कोई रहस्य नहीं है। वह सिर्फ अधिक मेहनत चाहती है।

—हेनरी सी० क्रेक

आप अपना जो मूल्य आँकते हैं, सफलता उसीका साकार रूप है।

—एलबर्ट हर्बर्ड

जिस मनुष्य से आप वार्तालाप कर रहे हैं उसमें पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यवसाय निहित है।

—इलियट

किसी ध्येय की सफलता के लिए मानव की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है।

—ब्राउन

सफलता के लिए अत्यधिक अध्यवसाय एवं प्रबल इच्छा शक्ति का होना आवश्यक है।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

ब्रह्मचर्य का निष्ठापूर्वक आचरण की सफलता का मूल मंत्र है।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

प्रत्येक सफल मनुष्य के जीवन में अटूट निष्ठा, तीव्र प्रामाणिकता का कोई न कोई केन्द्र अवश्य रहता है और वही उसके जीवन में सफलता का मूल स्रोत होता है।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

निःस्वार्थता की मात्रा के अनुपात में ही सफलता की मात्रा रहती है।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

सफलता का मूल रहस्य इसी में है कि साधनों को भी उतना ही महत्त्व दिया जाय जितना साध्य को।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

पृथ्वी पर सफलता का स्वरूप देख पाना कठिन है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

सफलता-प्राप्ति का साधन निर्भीकता है।

—स्वामी रामतीर्थ

मेरा विश्वास है कि किसी भी व्यवसाय में विशेष सफलता पाने की ठीक राह उस व्यवसाय का स्वयं को पूर्ण ज्ञाता बना लेना है।

—कारनेगी

संसार में किसी काम का अच्छा या बुरा होना उसकी सफलता पर निर्भर है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सफलता में दोषों को मिटाने की विलक्षण शक्ति है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सफलता में अनन्त सजीवता होती है, विफलता में असह्य शक्ति है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

किसी कठिन कार्य में सफल हो जाना आत्म-विश्वास के लिए संजीवनी के समान है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सफाई

न्हाए धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय ॥

—कबीर

शारीरिक स्वच्छता का सम्मान सदा ईश्वर, समाज और अपने प्रति उचित सम्मान से हुआ है।

—बेकन

स्वच्छता देवत्व के निकटतम है।

—जान वेंजले

सबल

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय।।

—वृन्द

दुर्बल मानव, जो सबल और शक्तिशाली पुरुषों का अपमान करता है वह मानो यमदूत को अपने पास आने का इंगित करता है।

—संत तिरुवल्लुवर

सभापति

निज पद गौरव साथ सभा को जो न सम्भाले।
सभी सुलझती हुई बात को जो उलझा ले।।
इस प्रकार का नहीं चाहिए हमें सभापति।
जिसे जो चाहे वही मोम की नाक बना ले।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (पद्य प्रसून)

देख सभा का रंग ढंग से काम चलावे।
पचड़ों में पड़ धूल में न सिद्धान्त मिलावे।।
हमें चाहिए नीति निधान सभापति ऐसा।
जो सब उलझी हुई गुत्थियों को सुलझावे।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (पद्य प्रसून)

सभ्यता

सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है। आप बुरे से बुरा काम करें; लेकिन अगर आप उस पर पर्दा डाल सकते हैं तो आप सभ्य हैं, जैन्टिलमैन हैं। अगर आप में यह सिफत नहीं तो आप असभ्य हैं, गंवार हैं, बदमाश हैं। यही सभ्यता का रहस्य है।

—प्रेमचन्द (सभ्यता का रहस्य)

जिस सभ्यता की स्प्रिट स्वार्थ हो, वह सभ्यता नहीं है, संसार के लिए अभिशाप है, समाज के लिए विपत्ति है।

—प्रेमचन्द (स्मृति का पुजारी)

घूम रही सभ्यता दानवी, 'शांति! शांति!' करती भूतल में।
पूछे कोई भिगो रही वह, क्यों अपने विषदंत गरल में॥

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (चक्रवाल)

शहद भरी मुसकान सभी घर रख आते हैं,
बाहर आते हैं लेकर फीकी मुसकानें;
यह शहरी सभ्यता बड़ी अद्भुत है भाई।
अनजाने से लगते सब जाने पहचाने।

—देवराज दिनेश (भारत माँ की लोरी)

व्यक्ति की तरह राष्ट्र भी जीवित रहते हैं और मरते हैं; लेकिन सभ्यता का कभी भी पतन नहीं होता।

—मेजिनी

सभ्यता का सही मूल्यांकन अच्छी महिलाओं का उस पर प्रभाव है।

—एमर्सन

सभ्यता की वास्तविक परीक्षा राष्ट्र की जनगणना अथवा नगरों की रूपरेखा अथवा फसल से नहीं होती, अपितु किस तरह के मनुष्य राष्ट्र उत्पन्न करते हैं इससे होती है।

—एमर्सन

अधिक साधन और अधिक अवकाश मानव को सभ्य बनाने वाले हैं।

—डिजरायली

हमारी आजकल की सभ्यता का सबसे बड़ा दोष यह है कि हम अपनी नाक के आगे नहीं देखते। हम केवल आगे की बात सोचते हैं, कल का हम को ध्यान नहीं है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों को लेकर चलने वाला समाज ही विज्ञान द्वारा उपलब्ध ज्ञान एवं साधनों के सम्पर्क-उपयोग द्वारा सभ्यता का सच्चा एवं वास्तविक विकास कर सकता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

इस सभ्यता की उपज वे दसियों मंजिलों की हवेलियाँ हैं तो गिज-बिजाती चालें भी हैं। दृष्टि का छता है वह इन्हें अलग दिखाता और बताता है। ये दोनों सिरे परस्पर को थामते हैं और एक हैं।

—जैनेन्द्र (इतस्ततः)

यदि सभ्यता के कुछ भी अर्थ हों, तो वह यही हैं कि असमर्थ और निबलों के न्यायोचित दावे जबरदस्ती के बाहुबल से परास्त न हों।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

आज की सभ्यता दुश्शासन की तरह मन का चीर हरण करना चाहती है, अनुभव करने के पूर्व ही वह सयाना कर देती है, आँखों में उँगली डाल कर सुगन्ध का संकेत उसके लिए अधिक सूक्ष्म है, पपड़ी तोड़कर मालूम करती है वह सब बात।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (फुलवाड़ी)

मनुष्य की बड़ी से बड़ी सभ्यता स्वीकरण शक्ति के प्रभाव से ही पूर्ण महात्म्य प्राप्त कर सकी है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य विचार)

सभ्यता एकान्तिक वस्तु नहीं है। उसका अर्थ हर एक जगह ही नहीं होता। पश्चिम की सभ्यता पूर्व की सभ्यता हो सकती है।

—महात्मा गांधी

सभ्यता क्या है ? वह तो पूरी राक्षसी है। जो सभ्यता गरीबों के मुंह का कौर, जन-साधारण का जीवन, मुट्ठी में करके उन्हें मरने को लाचार बना दे वह राक्षसी नहीं तो और क्या कहलायेगी ?

—शरच्चन्द (जागरण)

महान् सभ्यताएँ कभी नहीं मरतीं।

—कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी

सम-दृष्टि

सम दृष्टि तब जानिए, सीतल समता होय।
सब जीवन की आतमा, लखै एक सी सोय॥

—कबीर

ज्ञानी लोग विद्वान् और विनयी ब्राह्मण में, गाय में, हाथी में, और श्वान के खाने वाले चाण्डाल में समदृष्टि रखते हैं।

—श्रीकृष्ण (भगवद्गीता)

समय

मैंने समय को नष्ट किया है अब समय मुझ को नष्ट कर रहा है।

—शेक्सपियर

दौड़ना व्यर्थ है। मुख्य बात तो समय पर काम निकालना है।

—ला फांते

समय परिवर्तन धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

समय बदलने पर लोगों की आँखें भी बदल जाती हैं।

—जयशंकर प्रसाद

का बरषा जब कृषी सुखाने। समय चूक पुनि का पछिताने॥

—तुलसीदास

समय फिरें रिपु होंहि पिरीते।

—तुलसीदास (मानस-अयोध्या०)

समय की पाबन्दी सुशीलता का चिह्न है।

—सम्राट लुई

समय का व्यवधान अपराध की गुरुता को ज्यों-ज्यों अस्पष्ट करता जाता है, त्यों-त्यों लघु बनाता जाता है, दण्ड का भार त्यों-त्यों और भी गुरुतर और असह्य होता जाता है।

—शरच्चन्द्र (स्वामी)

बीता हुआ समय और कहे हुए शब्द कदापि वापस नहीं बुलाए जा सकते।

—कहावत

समय और विचार महान् शोक को भी निस्तेज कर देता है।

—कहावत

एक चुरु जल प्यासो जीवै, यौं राखै कौ मान।
पाछै सुधा सिन्धु कहा कीजै, छूटि गए जै प्रान॥

—व्यास वाणी

रुके महंत, भूप, वीर, पर न जन हृदय रुका,
रुका नहीं कभी समय का नित्य सत्य कारवाँ!

—प्रभाकर माचवे (अनु-क्षण)

धन्य कमल, दिन जिसके, धन्य कुमुद, रात साथ में जिसके।
दिन और रात दोनों, होते हैं हाय! हाथ में किसके?

—मैथिलीशरण गुप्त (साकेत)

विज्ञों ने यह बात बहुत ही ठीक बताई,
बन जाती है कहीं सुधा भी विष दुखदायी।

—मैथिलीशरण गुप्त (शकुन्तला)

'रहिमन' असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय।
बधिक बधै मृग बान सों, रुधिरै देत बताय॥

—रहीम (रहिमन विलास)

मरत प्यास पिंजरा पर्यो सुआ समय कै फेर।
आदरु दै दै बोलियतु बाइसु बलि की बेर॥

—बिहारी (बिहारी रत्नाकर)

पुरुष कुछ नहीं, समय वलवान,
समय के हाथ फलाफल दान।
रत्न बन गए धूल के ढेर,
न क्या कर सका समय का फेर।

—बलदेवप्रसाद मिश्र (सांकेत संत)

कपोत के चंचल पक्ष-पात से,
शशाद की निस्वनिता उड़ान से,
खगेंद्र के निर्मल स्वर्ण पंख से
अतीव तीव्रता द्रुत चाल काल की।

—अनूप (वर्द्धमान)

उपदेसी बूझा मन माहीं। मिली समय फिर आवति नाहीं॥
बोल समय में बोलव भलो। डोल समय में डोलव भलो॥
अपनी समय पपीहा बोले। सुनि ता वचन बहुत मन डोले॥
अपनी समय मेघ जल ढारा। हरित होइ धरती संसारा॥
समय पाइ जीवन तन आवै। सुन्दरता छवि देह बढ़ावै॥
समय पाइ जब मालति फूलै। तब मधुकर मन ता पर भूलै॥

—नूर मुहम्मद (अनुराग बाँसुरी)

समय शुभ जीवन और लक्ष्मी का अक्षय भण्डार है।

—अज्ञात

समय सत्य का पथ-प्रदर्शक है।

—सिसरो

स्वर्ण का प्रत्येक धागा मूल्यवान होता है इसी तरह समय का प्रत्येक क्षण।

—मेसन

किसी भी विचारशील मानव के लिए जीवन की क्षणभंगुरता का अंतिम अर्थ वह नहीं है कि वह उन क्षणों को नष्ट करे।

—रस्किन

समय ही धन है।

—कहावत

समय का उचित उपयोग करना समय को बचाना है।

—बेकन

समता

है नहीं नीच कोई, न ऊँचा कहीं
हम सभी एक हैं, एक इंसान हैं,
भूख है प्यास है, चाह है आस है,
एक ही जिन्दगी एक मुसकान है,
दुःख है सुख सभी के लिए एक से,
दो उन्हें बाँट, दो प्रेम का दान है।

—उदयशंकर भट्ट (कणिका)

सब ही को यह जगत महँ, सिरज्यौ विधिना एक।
सब महँ गुन अवगुन भरे, को बड़ छोट विवेक॥

—सुधाकर द्विवेदी

चयन मत करो, चयन मत करो,
वरण करो—
सुन्दर कुरूप को, ऊँच नीच को,
भले बुरे को, कमल कीच को,
विगत युगों के गरल,
मनुज के कल्पित भेद हरो,
कुत्सित खेद हरो!

—सुमित्रानंदन पंत (वाणी)

समता ही सिद्धि की कसौटी है।

—अज्ञात

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुख दुःखेषु समः संयविवर्जितः॥

(जो शत्रु मित्र में और मान-अपमान में सम (बराबर) है, सर्दी-गरमी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वों में सम है और आसक्ति से रहित है वह भक्तिनाम् पुरुष मुझको प्रिय है।)

—श्रीकृष्ण (भगवद्गीता)

पूर्णतया समता आए बिना कोई भी सिद्ध योगी, सिद्ध भक्त अथवा सिद्ध ज्ञानी नहीं समझा जा सकता।

—अज्ञात

समाचारपत्र

इस अँधियारे विश्व में, दीपक है अखबार।
सुपथ दिखावे आपको, आँख करत है चार॥

—मेलाराम (शिक्षा सहस्री)

समाचारपत्र जनता के विश्वविद्यालय हैं।

—जे० पार्टन

समाचारपत्र साधारण जनता के शिक्षक हैं।

—वीचर

आजकल हम विचारों के लिए संघर्ष करते हैं और समाचारपत्र हमारी किलेबन्दियाँ हैं।

—हेन

समाचारपत्र विश्व के दर्पण हैं।

—जेम्स एलिस

मैं लाखों संगीनों की अपेक्षा तीन विरोधी समाचारपत्रों से अधिक भयभात रहता हूं।

—नेपोलियन

समाज

सभी कार्यों में अपनी बुद्धि लड़ाने से जैसे समाज नहीं रह सकता, वैसे ही समाज भी अगर सब समय, सभी कार्यों में अपना मत चलाना चाहे, तो उससे मानव टिक नहीं सकता। क्या मानव गलती करना, अन्याय करना जानता है, और समाज नहीं जानता।

—शरच्चन्द्र (चरित्रहीन)

समाज को चोट पहुँचाना और समाज के दम्भ पर प्रहार करना एक बात नहीं है। सभी का एक सच्चा अधिकार होता है। समाज उद्धत होकर जब अपने अधिकार की सच्ची सीमा को लाँघ जाता है, तब उसको चोट पहुँचानी ही पड़ती है। इससे समाज मरता नहीं, उसके होश ठिकाने होते हैं, मोह छूट जाता है।

—शरच्चन्द्र (चरित्रहीन)

सभ्य समाज ने कदाचित इस बात को भली भाँति समझ लिया है कि मानव को बिना पशु बनाये उससे पशुओं का काम ठीक प्रकार से नहीं लिया जा सकता है।

—शरच्चन्द्र (श्रीकान्त, पर्व २)

जो समाज दु:खी का दु:ख नहीं समझता, आफत-विपद में हिम्मत नहीं बंधाता, वह समाज मेरा नहीं, वह समाज तो बड़े आदमियों का है।

—शरच्चन्द्र (परिणीता)

जिस समाज के कानून मर्द और औरत में भेदभाव रखते हैं, वह समाज नहीं पिशाचों का कुनबा है।

—शरण (सोना माटी)

समाज मानव-हृदय का कारागार है, समाज एक प्रकाण्ड इंजन वाला कारखाना है,, क्षुधानल-प्रदीप्त प्रयोजन ही असफलता का कोयला जुटाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (समाज में मुक्ति)

मानव समाज प्रत्येक समाजस्थ के स्वार्थ के साधन का प्रकृष्ट उपाय है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (समाज में मुक्ति)

अगर हम में शक्कर का गुण है तो हम समाज में ऐसे विलीन हो जायेंगे जैसे समुद्र में नदी या सिन्धु-बिन्दु। सिन्धु में विलीन होने पर बिन्दु स्वयं ही सिन्धु हो जाता है बिन्दु नहीं रहता।

—विनोबा भावे

अच्छा समाज शरीर जैसा है, समाज में जो दुःखी हिस्सा है उसको और सब को ध्यान देना उचित है।

—विनोबा भावे

तुम समाज के साथ ही ऊपर उठ सकते हो और समाज के साथ ही तुम्हें नीचे गिरना होगा। यह तो नितान्त असम्भव है कि कोई व्यक्ति अपूर्ण समाज में पूर्ण बन सके। क्या हाथ अपने आप को शरीर से पृथक् रख कर बलशाली बन सकता है? कदापि नहीं।

—स्वामी रामतीर्थ

हमारा समाज एक सीढ़ी के समान है। जाति-भेद और वर्णाश्रम का एक ही उद्देश्य है—मानव-जीवन को नीचे से ऊपर उठाकर एक परिणाम पर ले जाना।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

प्रत्येक समाज में कोई न कोई विशेष अभिप्रायः है; किन्तु वह सहज ही समझा नहीं जा सकता। मनुष्य को उचित है कि वह जड़वत् होकर उनका अनुसरण न करके, उन्हें जानने की चेष्टा अवश्य करे।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

समाज हमें काम में लगाये रखता है, नाना प्रकार के सामाजिक आलाप, सामाजिक कार्य, सामाजिक आमोद की रचना करके हमारे मन के उद्यम को आकर्षित कर लेता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अन्दर-बाहर)

समाज को प्रसन्न करने के लिए बुद्धि के दो चक्षुओं को अंधा नहीं करना चाहिए।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (शांतिनिकेतन के पौष)

जो समाज सभ्य नहीं होता उस समाज में स्वभाव-बलिष्ट लोग भी दुर्बल होकर रहते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दिन)

यह नियम है कि जब हमारा कोई अंग विकृत हो जाता है तो, उसे काट डालते हैं, जिससे उसका विष समस्त शरीर को नष्ट न कर वाले। समाज में उसी नियम का पालन होना चाहिए।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

समाज तो भय के बल से चलता है। आज समाज का आँकुस जाता रहे, फिर देखो संसार में क्या-क्या अनर्थ होने लगते हैं।

समाज व्यक्ति ही से बनता है। और व्यक्ति को भूलकर हम किसी व्यवस्था पर विचार नहीं कर सकते हैं।

समाज की ऐसी व्यवस्था, जिसमें कुछ लोग मौज करें और अधिक लोग पिसें और खपें, कभी सुखद नहीं हो सकती।

—प्रेमचन्द (गोदान)

समाज एक भयंकर भूत है जिससे सदैव डरते रहना चाहिए।

—प्रेमचन्द (नैराश्य लीला)

समाज न तो पवित्रता को समझता है और न ही किसी पर अँगुली उठाता हुआ कुछ सोचता है विपला। वह तो तिल का ताड़ करना जानता है।

— शरण (जिन्दगी की तहें)

जो आश्वासन समाज पुरुष को दे सकता है, वह प्रेयसी नहीं दे सकती। समाज पुरुष के लिए बहुत आवश्यक है। उसके लिए एक मान का स्थान चाहिए।

—जैनेन्द्र (जै० क० भाग ६)

कर्त्तव्य का पालन न करना समाज की नाक काटना है।

—प्रेमचन्द (मृतक का भोज)

समाज की आँखों में सदैव मैल रहता है और उसकी तीखी जवान में कलुषिता।

—शरण (दीया, लौ और बाती)

तुम जैसे लोग ही समाज की अधिक निन्दा करते फिरते हैं, जो समाज से कोई सम्बन्ध ही नहीं रखते, बल्कि उसकी ओर से सर्वथा उपेक्षित रहते हैं। तुम लोग न तो अच्छी तरह पराये समाज को जानते हो और न ही अच्छी तरह अपने समाज को।

— शरच्चन्द्र (श्रीकांत, पर्व २)

जो है नहीं, उसे मैं नहीं मानता। भगवान् नहीं है। देवी-देवता भी झूठी कल्पना हैं। परन्तु जो हैं, उन्हें तो अस्वीकार नहीं करता।समाज पर मैंश्रद्धा करता हूँ, मनुष्य की मैं पूजा करता हूँ। जानता हूँ कि मनुष्य की पूजा करना ही मनुष्य-जन्म की सार्थकता है।

—शरच्चन्द्र (गृहदाह)

जिस की जितनी शक्ति है, वह उतना ही बड़ा दस्यु है। सुविधा और सामर्थ्य के अनुसार दूसरे का गला दबा कर छीन लेना ही इन लोगों का कर्म है। वही तो दुनिया है, वही तो समाज है, वही तो मानव का धंधा है।

—शरच्चन्द्र (देना पावना)

जो समाज सभ्य होता है वह बहु को विचित्र भाव में आत्मा के साथ सम्बन्ध मुक्त होकर ही गौरवान्वित होता है। केवल उपकरणों के बाहुल्य से एवं सुविधा के समावेश से उसकी कोई सार्थकता नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दिन)

हमारे देश के समाज में भी समस्त क्षुद्रता, विच्छिन्नता दूर करके, ज्ञान, प्रेम और कर्म में भूमा की प्रतिष्ठा किए बिना मानवात्मा कभी बलिष्ठ एवं आनन्दित हो पाती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दिन)

समाज साधारणतः श्रेणी के ही लिए साँचे से मानव को विभक्त करता है; क्योंकि जातिकुल को और धन को मर्यादा देना सहज होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य विचार)

एकहि नीति-तत्त्व मैं जाना। हेतु समष्टि व्यक्ति-बलिदाना॥
स्वजनहि वसतजासु सन माहीं। सघत धर्म-हित तेहि ते नाहीं॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

समाज सदस्यों के लाभ के लिए होता है न कि सदस्य समाज के लाभ के लिए।

—हर्बर्ट स्पेन्सर

समाज में दो बड़ी श्रेणियाँ होती हैं, एक जिनके पास क्षुधा से अधिक भोजन है और दूसरी वह जिनके पास भोजन से अधिक क्षुधा है।

—चैम्फर्ट

सब से अधिक सुखी समाज वह है जिसमें हरेक व्यक्ति परस्पर हार्दिक सम्मान की भावना रखता है।

—गेटे

वही समाज सदा सुखी रह सकता है जिसने नैतिक गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् कर लिया है।

—रस्किन

जिस समाज का एक मात्र लक्ष्य न्याय होगा वही समाज आदर्श-समाज कहलायेगा।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

पारस्परिक सहयोग एवं शांति के साथ ही समाज का निर्माण हो सकता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

समाजवाद

शोषण मुक्त समाज की रचना करके वर्तमान समाज की प्रचलित दासता, विषमता असहिष्णुता को सदा के लिए दूर करके, समाजवाद, स्वतन्त्रता, समता और भ्रातृत्व की वास्तविक स्थापना करना चाहता है।

—आचार्य नरेन्द्रदेव

धर्म के बोझ के तेल से मानव दबा पड़ा है। समाजवाद धर्म की सच्ची मीमांसा कर धर्म की कैद से मनुष्य को नजात दिलाता है और इस तरह मानवता के गौरव को बढ़ाता है।

—आचार्य नरेन्द्र देव

समाजवाद मानव को विवशता के क्षेत्र से हटाकर उसे स्वाधीनता के राज्य में ले जाना चाहता है।

—कार्ल मार्क्स

दो ही स्थानों पर समाजवाद कार्य करता है। एक तो मधुमक्खियों के छत्ते में और दूसरा चींटियों के बिल में।

—अज्ञात

समाधि

समाधि में ही साक्षात्कार होता है। समाधि के एक क्षण की तुलना में पठन-पाठन और मनन का सहस्र वर्ष भी नहीं ठहरता।

—डॉ० सम्पूर्णानन्द

देश-प्रेम के दीवानों का समाधियों में राग है—एकता, समानता और राष्ट्रीयता का। इन समाधियों से एक सी ही ध्वनि उठती है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' बादलों के बीच दामिनी चमकती है केवल उनके इसी नीरवता से उठते हुए उद्गार सुनने को बूंदें गिरती हैं, उनके चरणों को मोतियों से धोकर सागर में ज्वार उठा देने को।

—बलभद्रप्रसाद गुप्त

परब्रह्म के ज्ञान से देह के अभिमान के नष्ट होने पर जहाँ-जहाँ मन जाता है तहाँ-तहाँ समाधि है।

—चाणक्य

समालोचक

आदर्श मानव-चरित्र के पैमाने से नाप-जोखकर साहित्य की श्रेष्ठता का निर्णय देने का चलन कदाचित् इस देश के सिवा विश्व में और किसी भी देश के सम्मलोचकों को नहीं देखा जाता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दो बहनें)

जिसका हृदय सहानुभूति के भाव से परिपूर्ण है उसे ही आलोचना करने का अधिकार है।

—लिंकन

ठीक-ठीक रचना करने की अपेक्षा समालोचक होना अधिक सरल है।

—डिजरायली

समालोचक वे व्यक्ति हैं जो साहित्य और कला में असफल रहे हैं।

—डिजरायली

सब से कटु आलोचक हमेशा वे व्यक्ति रहे हैं जिन्होंने कभी लिखने का प्रयास नहीं किया या वे व्यक्ति जो मौलिक रचना करने में असफल रहे हैं।

—हैजलिट

समालोचक

कभी कभी मौन रह जाना सब से कटु आलोचना है।

—चार्ल्स बक्सटन

सबसे अच्छी समालोचना वह है जिसमें समालोचक लेखक का शत्रु नहीं वरन् प्रतिद्वन्द्वी हो।

—डिजरायली

वास्तविक समालोचना का ध्येय प्रशंसा अथवा निन्दा नहीं है। ठीक-ठीक मूल्यांकन करना, दृढ़ता से प्रमाणित करना, बुद्धिमानी से स्वीकृत करना और ईमानदारी से पुरस्कृत करना—यही समालोचना का ध्येय और उचित कर्त्तव्य है।

—सिम्स

सम्मान

प्रख्यात मृतक पुरुषों का सर्वश्रेष्ठ सम्मान हम उनका अनुकरण करके ही करते हैं।

—महात्मा गांधी

सम्मान रक्षा से बड़ी आत्म रक्षा है। सत्य रूप आत्मा की रक्षा में जो सम्मान खोया जाता है वह खोये जाने लायक है।

—जैनेन्द्र (जै० क० भाग–४)

सम्मान सच्चे परिश्रम में है।

—जी० क्लीव लैंड

अच्छा सम्मान पाने का मार्ग यह है कि जो तुम प्रतीत होने की कामना करते हो वैसा बनने का प्रयास करो।

—सुकरात

मैं अपने सम्मान पर आघात पहुँचाने की अपेक्षा दस सहस्र बार मरना अधिक अच्छा समझता हूँ।

—एडीसन

सरकार

सभी सरकारों का ध्येय समाज का सामूहिक सुख है, अथवा होना चाहिए और इसकी पूर्ति अच्छी नीति के परिपालन से अच्छी प्रकार की जा सकती है।

—वाशिंगटन

सरकार का कर्तव्य सब की पूरी रक्षा करना है।

—विनोबा भावे

वही पूर्ण (आदर्श) सरकार है जिसमें एक तुच्छ व्यक्ति के साथ किया गया अन्याय सभी का अपमान समझा जाता है।

—सोलन

सर्वव्यापी

वह सर्वत्र है, क्योंकि वह मुक्त हैं, उन्हें कहीं भी कोई बाधा नहीं। न है शरीर की बाधा, न है पाप की बाधा। वह हैं, इस ध्यान को सम्पूर्ण ग्रहण करने के लिए उनका मुक्त विशुद्धस्वरूप मन में उज्ज्वल करके देखना पड़ेगा। वह कहीं किसी से भी बद्ध नहीं हैं। यही सर्वव्यापी का लक्षण है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (द्वौ)

सर्वव्यापी कवि हैं अर्थात् उनका आनन्द। एक सश्रृङ्खला सुषमा में, सुविहित छंद में स्वयं को प्रकाश कर रहा है, उनका जगत् महाकाव्य ही इसका साक्षी है। जगत् प्रकृति में वह कवि है और मानव की प्रकृति में वह अधीश्वर है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (द्वौ)

जो स्वयं अकाय है, उन्होंने कायारूपी काव्य रचना की है, जो अपापविद्ध है वह पाप-पुण्यमय मन के अधिपति होकर बैठे हैं, वही सर्वव्यापी है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (द्वौ)

जो सर्वव्यापी हैं, उन्हें सर्वत्र प्राप्त करके योगमुक्त धीर पुरुष सर्व में ही प्रवेश करते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नवयुगीन उत्सव)

सर्वश्रेष्ठ

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है।

—मीरा

सर्वश्रेष्ठ मानव वह है जिसे पूर्ण संतोष है।

—एच० स्पेन्सर

सहनशीलता

मनुष्य कटु उक्तियों को किसी प्रकार सहन कर लेता है; परन्तु जब उसके ग्रन्थों और धर्म नेताओं पर आक्रमण होता है तब उसकी सहनशीलता की प्रायः समाप्ति हो जाती है।

—हरिऔध

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती ही पर परत सब, शीत, घाम अरु मेह॥

— रहीम

ससुराल

ससुराल की रोटियाँ मीठी मालूम होती हैं, पर उनसे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

लड़की जब तक मैके में क्वांरी रहती है, वह अपने को उसी घर का समझती है; लेकिन जिस दिन ससुराल चली जाती है, वह अपने घर को दूसरों का घर समझने लगती है। माँ-बाप, भाई-बंधु सब वहीं रहते हैं, लेकिन वह घर अपना नहीं रहता। यह दुनिया का दस्तूर है।

—प्रेमचन्द (माँ)

कोई लड़की ऐसी भी है, जो खुशी से ससुराल चली जाती हो ? और कौन पिता ऐसा है, जो लड़की को खुशी से विदा करता है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

चाहत न सारो औ ससुर जयों जात सासु
साम्ही परि मिलै जहाँ ठानति लराई है।
सारी सरहज कह्यो करत रसोई बीच
पथ पयहारी खात सेरुक अढ़ाई है।
कहत गुपाल घर घरेही रहत यह
याने यहाँ आय रहटानि भली पाई है।
नाई ले कै संग कुल कीरति गमाई ऐसी
जाय ससुरारि घर कारवा जमाई है।

—गुपालराय (दंपति वाक्यविलास)

नित नई प्रीति रस रीति नई नारिन सों,
आदर अधिक देखि भूलै घर वार को।
पौढ़िवे को पलँग पै गेंदुआ गिलम खीर,
खांड पकवान मिलै भोजन वहार को।
नित प्रति होत देखि हिय में हुलास सारी,
सारे सरहज सासु ससुर के प्यार को।
कहत गुपाल फूले अंग न समात मो पै,
कह्यौ नहीं जात कछु सुख ससुरारि को।।

—गुपालराय (दंपति वाक्यविलास)

अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों की नामावली

